₹ 10/-

हँसती दुनिया

वर्ष 42 अंक 6 जून 2015

JAI RAM DASS

NIRANKARI
SONS
JEWELLERS PVT. LTD

RAMESH NARANG
GOVT. APPROVED VALUER

Ramesh Narang : 9811036767
Avneesh Narang : 9818317744

27217175, 27437475, 27443939

Shop No. 39, G.T.B. Nagar, Edward Line,
Kingsway camp, Delhi-9
E-mail: nirankarisonsjewellers@gmail.com

वर्ष 42
अंक 6
पृष्ठ 68

हँसती दुनिया

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका
(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

जून
2015

स्तम्भ

सबसे पहले 4
कभी न भूलो 5
जन्म दिन मुबारक 12
समाचार 17
वर्ग पहेली 18
भैया से पूछो 34
पढ़ो और हँसो 46
रंग भरो परिणाम 48
आपके पत्र मिले 65

चित्रकथा

दादा जी 13
किट्टी 52
फोटो फीचर 58

सम्पादक
विमलेश आहूजा
सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

कार्यालय फोन :
011-47660200
Fax : 011-27608215
E-mail:
editorial@nirankari.org

कहानियां

मैं खीर नहीं खाऊँगा — अनिल सतीजा 7
मत बोलो — साबिर हुसैन 21
टिंकू की धैर्य परीक्षा — राजकुमार जैन 'राजन' 27
क्या श्रेष्ठ है? — राधेलाल नवचक्र 36
हिफाजत — डॉ. सैया नन्दवाल 37
गुस्से का परिणाम — अंकुश्री 44
समझौता — राधेलाल 'नवचक्र' 56

कविताएं

स्वच्छता हमारे जीवन का — हरजीत निषाद 6
हमने बोए पौधे — गफूर 'स्नेही' 11
गरमी का डंडा — कमल सिंह चौहान 19
दर्पण का गीत — रामण्डीलाल अग्रवाल 31
पौधे — डॉ. बृजनंदन वर्मा 43
जल जीवन है — मदन 'शेखपुरी' 51
बिल्ली भूरी–काली — डॉ. रामनिवास 'मानव' 59

विशेष/लेख

सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी — विकास अरोड़ा 20
रंगीन संसार तितलियों का — दीपांशु जैन 25
कबूतर को कैसे होता है दिशा ज्ञान — डॉ. विनोद गुप्ता 32
इसे कहते हैं स्मरण–शक्ति — कैलाश जैन एडवोकेट 40
विद्यार्थी छुट्टियां कैसे मनाएं? — भावना जेस्वानी 60
इतिहास चाकलेट और कोकोआ वृक्ष का — गोपाल जी गुप्ता 61

COUNTRY	ANNUAL	3 YEARS	6 YEARS	10 YEARS	20 YEARS
INDIA/NEPAL	Rs. 100	Rs. 250		Rs. 600	Rs. 1000
UK	£ 12	—	£ 60	£ 100	£ 150
EUROPE	€ 15	—	€ 75	€ 125	€ 200
USA	$ 20	—	$ 100	$ 150	$ 250
CANADA/AUSTRALIA	$ 25	—	$ 125	$ 200	$ 300

OTHER COUNTRIES # Equillant to U.S. Dollars as mentioned above

प्रभारी पत्रिका विभाग : सी. एल. गुलाटी

प्रकाशक एवं मुद्रक राधेश्याम ने सन्त निरंकारी मण्डल, निरंकारी कालोनी, दिल्ली–9 के लिये, हरदेव प्रिंटर्ज, निरंकारी कालोनी, दिल्ली –9 से मुद्रित करवाया।

सबसे पहले

नीयत से नियति

आज अधिकांश लोगों की आकांक्षा अपने–आपको ऊपर उठाने की होती है। अपने को ऊपर उठाने में वह कोई कसर भी नहीं छोड़ता। साम, दाम, दंड, भेद की नीति अपनाकर वह अपनी आकांक्षा को प्राप्त करने का प्रयास करता है, और तो और वह उस अपने अमुक लक्ष्य को पाने के लिए योग्य है या नहीं, यह बोध बहुत कम लोगों को होता है। जिसको यह बोध होता है कि वह अमुक वस्तु, पदार्थ को पाने का पात्र है, वह व्यक्ति हमेशा सहज, सजग एवं परिश्रमी अवश्य ही होता है और यह सब उसके कार्य–कलाप एवं आचरण से प्रकट भी होता है।

एक व्यक्ति के व्यक्तित्व का अनुमान अक्सर उसकी बोलचाल, रोजमर्रा की कार्यशैली एवं आचरण से लगाया जाता है। हमारे समाज में अनेकों का आचरण बहुत अच्छा होता है, वे सबकी बात मानते हैं, किसी की बुराई भी नहीं करते, मीठा भी बोलते हैं यदा–कदा किसी की सहायता भी करते हैं, फिर भी उनके चेहरे पर वह खुशी दिखाई नहीं पड़ती जो कि दिखाई देनी चाहिए।

अब, सोचने की बात यह है कि शुद्ध आचरण, मीठे बोल यथोचित सहायता एवं अनेकों सेवा के कार्य करने के बाद भी ऐसा क्या है जो हमें आलौकिक खुशी से वंचित रखता है।

प्यारे साथियो, अगर मैं शुद्ध आचरण रखता हूँ या मेरा आचरण सामाजिक मर्यादा के अन्तर्गत है तो यह बहुत ही प्रशंसनीय एवं अच्छी बात है। इससे मुझे मान–सम्मान, प्रतिष्ठा मिल जाना स्वाभाविक है क्योंकि हर कोई इस तरह का आचरण पसंद करता है परन्तु इस आचरण के पीछे मेरी मंशा क्या है इसका बहुत बड़ा महत्व है। अगर मैं साफ–सुथरा जीवन इसलिए जी रहा हूँ कि मुझे इसमें लाभ होगा। चाहे वह लाभ पद, प्रतिष्ठा, मान–सम्मान या धन पाने का हो वह भी एक प्रकार का लालच ही है। इसमें हमारी नीयत का मूल्य है जो कि अनमोल है। अपने पूर्ण विकास के लिए, शुद्ध नीयत से किया हुआ हर कार्य आलौकिक खुशी देगा अन्यथा तो वह दूसरों की आंखों में अच्छा बनना केवल उनकी आंख में धूल झोंकने के समान है। दूसरे की आंख में धूल झोंकना अर्थात् अपने अंतःकरण को नीचे की ओर ले जाना। इसलिए शुद्ध नीयत एवं निर्मल भाव से किये हुए कार्य की नीयति का निर्माण भी शुद्ध एवं निर्मल परमात्म–तत्व की तरह ही होगी।

– विमलेश आहूजा

कभी न भूलो

– संग्रहकर्ता : प्रियंका (कर्वी)

★ ज्ञान और कर्म के संगम से ही पृथ्वी स्वर्ग बनेगी।

★ प्रत्येक वस्तु मूल्यवान है लेकिन जीवन सर्वोपरि है। जीवन की मुक्ति सद्गुरु द्वारा ही सम्भव है। – निरंकारी बाबाजी

★ समय का सदुपयोग ही जीवन का सही मूल्यांकन है।
– पुष्कर लाल केडिया

★ अधिक बोलना कई बार अनर्थकारी होता है। जबकि कई बार मौन रह जाने से संकट टल जाता है। – जयशंकर प्रसाद

★ सब धर्मों में शील एक छिपा खजाना है। – महर्षि वेदव्यास

★ मनुष्य की आत्मिक तृप्ति सांसारिक धन से कदापि नहीं हो सकती।
– कठोपनिषद

★ मांगने पर देना अच्छा है। दूसरे की आवश्यकता अनुभव करके बिना मांगे देना और भी अच्छा है। – खलील जिब्रान

★ दानशीलता मन का गुण है हाथों का नहीं। – एडिसन

★ हमारा ध्येय सत्य होना चाहिए न कि सुख। – सुकरात

★ ईश्वर सर्वशक्तिमान है उसकी दया उसकी अच्छाई तथा उसके न्याय का पार नहीं है। उसके अनुयायी नीतिमार्ग का परित्याग कर ही नहीं सकते।

★ पढ़ने में मन लगाओ, विद्या प्राप्ति के लिए पूरा यत्न करो जो कुछ ज्ञानार्जन कर लोगे, वही जीवन में सफलता तथा सम्मान देगा। ऐसा कोई काम मत करो जो अध्ययन में बाधा दे केवल ज्ञान की वृद्धि के लिए पूरी पढ़ाई करो। – नीति सुक्तक

बाल कविता : हरजीत निषाद

स्वच्छता हमारे जीवन का

स्वच्छता हमारे जीवन का अंग बने।
गंदगी न फैलाना जीने का ढंग बने।
प्रभु को प्रिय है ये कोई मजबूरी नहीं।
स्वच्छता पूजा है ये भक्ति का रंग बने।

गंदगी पार्कों नाले नालियों में न रहे।
गंदगी सड़कों गाँवों नदियों में न रहे।
दूर हो धरती से हर तरह की दुर्गन्ध।
गंदगी भेद भावों की दिलों में न रहे।

अपने हाथों से सफाई अब सब करें।
काम छोटा नहीं इसे बड़ा मान कर करें।
भाव बदलेगा तो बदलेगी ये सूरत भी।
सफाई आज से अभी से मिल–जुल कर करें।

अरबी लोककथा : अनिल सतीजा

मैं खीर नहीं खाऊँगा

बगदाद शहर में हशमत नामक एक नौजवान रहता था। वह स्वभाव से बड़ा आलसी और जिद्दी था। हशमत का पिता लौहार था। अपने बेटे के निकम्मेपन से माँ–बाप परेशान थे।

एक दिन हशमत के पिता ने उससे कहा– पता नहीं तुम्हारी अक्ल कब ठिकाने आयेगी। आजकल बगदाद में सन्त खालिद हुसैन आये हुए हैं। तुम उनका उपदेश सुनो। शायद तुम में सुधार आ जाए। बड़ी ना–नुकुर के बाद हशमत इसके लिए तैयार हुआ।

अगले दिन सुबह–सुबह वह उपदेश सुनने चल दिया। खालिद हुसैन बता रहे थे– "हर एक प्राणी को खाना–पीना देने वाला खुदा होता है। वह भली–भाँति जानता है कि किसको क्या चाहिए? उसके फैसले को कोई ताकत बदल नहीं सकती। उसे जो मंजूर है, होकर रहेगा।"

हशमत उपदेश सुनकर खालिद हुसैन के पास पहुँचा और बोला– "हजरत अभी–अभी आपने जो बातें कहीं, उन्हें जरा विस्तार से समझाइये।"

–बेटा, मिसाल के तौर पर मैं तुम्हें बताता हूँ कि अगर खुदा तुम्हें कोई भोज खिलाना चाहता है तो तुम उसे खाकर रहोगे। उसे रोकना किसी के लिए मुमकिन नहीं।

–ऐसी बात है? तब तो बताइये कि आज खुदा की मर्जी से मैं क्या खाने वाला हूँ?– हशमत ने मजाक उड़ाते हुए पूछा।

खालिद भी पहुँचे हुए सन्त थे। अपनी मुस्कान जारी रखते हुए उन्होंने बताया– आज तो तुम्हारे चेहरे पर यह लिखा हुआ है कि तुम जरूर खीर खाओगे।

– न खाऊँ तो?

– तुम शक मत करो, आज तुम जरूर खीर खाओगे।

– अगर न खाना चाहूँ, तो भी?

– चाहो या न चाहो तुम खीर खाने से नहीं बच सकते।

– मैं नहीं खाऊँगा। देखता हूँ कि खुदा मुझको कैसे खिलाता है?

– अगर खा ली तो?

– तो आपके उपदेश की हर बात मानूँगा और जो अमां–अब्बा चाहते हैं वही करूंगा।

–ठीक है।– कहकर खालिद मुस्कुरारकर इबादत में व्यस्त हो गये। हशमत ने लौटते वक्त सोचा कि घर लौटने पर उसकी अमां खीर बनाकर उसे खिला सकती है, या कोई पड़ोसी या मित्र उसे खीर खिला सकता है।

यह सोचकर वह शहर से बाहर रेगिस्तान की ओर चल पड़ा। उसने पूरे दिन रेगिस्तान में बिताने की सोची। चलते–चलते वह कुछ पेड़ों की छाया में पहुँचा। उसी वक्त उसे डर लगा कि आते–जाते कई मुसाफिर उसे खीर खाने को कह सकता है। वह झट पेड़ पर चढ़ गया और घने पत्तों के बीच जा बैठा।

एक घंटे के बाद एक छोटा–सा कारवां उधर आकर रूका। पेड़ों की छांव देखते ही थके हुए लोगों में जान आयी। काफिले के लोगों ने उन्हीं खजूर के पेड़ों के नीचे पड़ाव डाल दिया। खाने का वक्त हो गया। उन्होंने ऊँटों को पेड़ों से बाँध दिया।

काफिले के लोगों ने तरह–तरह के पकवान बनाने को सुझाया। लेकिन आखिर खीर बनाने पर सहमति हुई। तुरन्त चूल्हा जलाकर खीर बनाने के लिए पतीला चढ़ा दिया। थोड़ी ही देर में खीर बन गई। सब लोग खीर खाने की तैयारी करने लगे। खीर पकती देखकर हशमत ने नाक–भौं सिकोड़ी और ऊपर पेड़ पर ही छुपने में सलामती समझी।

अचानक काफिले के कुछ लोगों को थोड़ी ही दूर से रेत का गुब्बार–सा उड़ता नज़र आया।

–डाकू... रेगिस्तानी डाकुओं का गिरोह भागो...– वे चिल्लाए। सुनकर सभी ने अपना सामान आनन–फानन में ऊँटों पर लादा और भाग खड़े हुए। हशमत डर के मारे पेड़ पर ही छिपा रहा। कुछ ही पलों बाद वहाँ डाकुओं का गिरोह आ पहुँचा। उन्हें वहाँ कोई न दिखा। खीर का पतीला बदस्तूर उबल रहा था। लुटेरे भूख से बेहाल थे। खीर देखते ही खुश हो गये।

–ठहरो! इस खीर को मत खाओ। अरे! तुम पागल हो क्या? कोई एक साथ इतनी खीर बनाकर कैसे छोड़ सकता है? जरूर हमें मारने के लिए इसमें ज़हर मिला दिया होगा।– सरदार ने कहा।

–आप ठीक कहते हैं, सरदार! हमें मारने की कोशिश करने वाले जरूर एक आदमी को यहाँ छोड़ गये होंगे ताकि वह हमारी मौत की सूचना दे सकें।– एक लुटरे ने कहा।

–उस आदमी को ढूँढो। यहीं कहीं छिपा होगा।

लुटेरों ने ढूँढना शुरू किया। उनमें से एक चिल्ला पड़ा– अरे वो देखो एक आदमी पेड़ पर छिपा बैठा है।

दो लुटेरों ने जबरदस्ती हशमत को पेड़ से उतारा।

–आओ भाई, जरा यह खीर खा लो– सरदार ने उससे कहा।

–हरगिज नहीं, चाहे जान ले लो।– हशमत ने जवाब दिया।

अब तो सबका शक यकीन में बदल गया।

–ओह! लगता है इसी ने या इसके साथियों ने जहर वाली खीर बनाई है, इसकी सजा यही है कि इसे यह खीर जबरदस्ती खिलाकर मार दिया जाए।– सरदार ने ऐलान किया।

–मुझे तंग मत करो, मैं खीर नहीं खाऊँगा।– हशमत अड़ गया।

तब तो तीन लुटेरों ने हशमत के हाथ–पांव पकड़ लिये, पतीले से खीर निकालकर कटोरे में डाली गयी और जबरदस्ती हशमत के मुँह में उड़ेल दी गयी।

तीन–चार कटोरे खीर जबरदस्ती निगलने तथा लुटेरों द्वारा

मारने–पीटने की वजह से हशमत थककर बेहोश हो गया।

–ओह! लगता है मर गया। खीर में जहर था। हो सकता है इसके साथी हम पर हमला कर दें। यहाँ से भाग निकलो।– सरदार ने कहा।

सभी डाकू हशमत को वहीं छोड़कर भाग गये।

कुछ देर बाद जब अकेले हशमत को होश आया तो उसे अच्छी अक्ल आ चुकी थी। खालिद साहब ने ठीक ही कहा था। अब निकम्मापन छोड़कर अब्बा की तरह मेहनत करूँगा। उन्हें खुश रखूँगा।

यही सोचते–सोचते हशमत घर की तरफ चल पड़ा।

गीत : गफूर 'स्नेही'

हमने बोए पौधे

हमने वर्षा की ऋतु का
ऐसे किया स्वागत।
पौधे नए लगाए जिसमें
फल–फूल हैं सम्मत।

आम इमली गुलमोहर
संतरे नींबू अनार।
बेगम बेल, चमेली जाम।
जामुन वट छतनार।

पीपल तो है पूज्य
आँवला औषधि खान।
हमने बोया हरसिंगार
कई रोगों का निदान।

औषधि वृक्ष नीम को बोया
कांटे वाला बबूल है।
लेकिन ऐसे वृक्ष न बोए
जिसमें फल न फूल हैं।

आओ साथी चलाएं हम
मिल कर हरियाली अभियान।
वृक्षों के बिना धरती,
रेगिस्तान सी है वीरान।

हरे भरे पौधों से
धरती का श्रृंगार करें।
हरे पेड़ों से आकर्षित हो,
मेघ भी जल बौछार करें।

जन्म दिन मुबारक

रौनक (धुले)

महक (जीन्द)

खुश्बू (कठुआ)

हिमांशु (सिरसा)

रूहानियत (काशीपुर)

आनिश (बागी)

अमरप्रीत (खन्ना)

यशनीत (दिल्ली)

दिव्यांशा (11 पी.एस.)

अर्णीद (गोंदिया)

सुचेता (पठानकोट)

आस्थाप्रीत (खन्ना)

वंश (फरीदाबाद)

पियुष (मरोली बाजार)

हर्षित (मलौट)

सिमरन (शत्रुघ्नपुर)

स्वाति (भिवानी)

सिद्धान्त (दिल्ली)

विहान (डोम्बीवली)

तमन्ना (भिवानी)

सार्थक (रुड़की)

नितप्रीत (संगरूर)

जीआ (दिल्ली)

इस स्तम्भ के अन्तर्गत 10 वर्ष तक की आयु के बच्चों के फोटो भेज सकते हैं। जिस माह में बच्चे का जन्म दिन हो, उससे दो माह पूर्व केवल पासपोर्ट साइज का फोटो इस पते पर भेजें।

सम्पादक, हँसती दुनिया,
पत्रिका विभाग, सन्त निरंकारी मण्डल,
निरंकारी कालोनी, दिल्ली–9

फोटो के पीछे यह कूपन चिपकाना अनिवार्य है।

नाम.....जन्म दिनांक.....वर्ष.....

पता .....

.....

दादाजी
चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा
एक गाँव में एक सेठ के चार पुत्र थे। चारों खुशी से रहते थे।
एक दिन सेठ ने अपने बड़े बेटे को बुलाया और अपनी सम्पत्ति का तीन हिस्सों में बंटवारा करने को कहा।

पुत्र अपने पिता से कुछ पूछता, इससे पहले ही पिता का देहान्त हो गया।
अंतिम संस्कार के पश्चात्, बड़ा बेटा पिताजी की कही बात पर विचार करने लगा।
बहुत दिनों तक कोई हल न निकलने पर वह एक महात्मा के पास गया और बोला- महात्मा हम चार भाई हैं परन्तु पिता जी ने सम्पत्ति को सिर्फ तीन हिस्सों में बाँटने को कहा है।

महात्मा ने कहा- वह कल पंचायत में इसका उत्तर देगें।
अगले दिन सब पंचायत में एकत्रित हो गये।
और वे चारों भाई एक साथ खड़े हो गये।

महात्मा ने कहा आपके पिता ने यह ठीक तो नहीं किया परन्तु अब आप में से कोई भी अपना अधिकार छोड़ना चाहे वह आगे आये।

यह सुनकर तीन भाई आगे आ गये। चौथा वहीं खड़ा रहा।

फ़ैसला अपने आप हो चुका था।

जो व्यक्ति पिता की मृत्यु के एक दिन पश्चात् ही उसकी सम्पत्ति पर अधिकार जमाना चाहता हो, वह पिता से नहीं, केवल सम्पत्ति से प्यार करता था।

मिला ब्लैक-होल का बड़ा परिवार

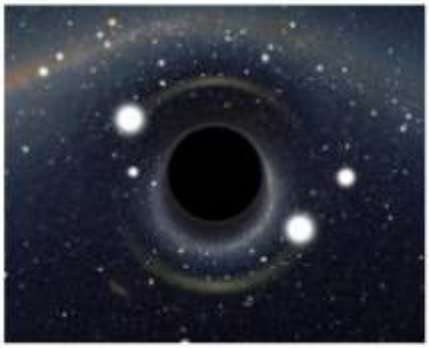

वॉशिंगटन। अंतरिक्ष विज्ञानियों ने नासा के चन्द्र एक्स–रे ऑब्जर्वेटरी की मदद से एक ऐसी लौकिक वस्तु की खोज की है, जो अंतरिक्ष में ब्लैक–होल के अस्तित्व, निर्माण और उसके आसपास की चीजों पर उसके प्रभाव को लेकर कई सवालों के जवाब ढूंढने में मदद कर सकता है। एनजीसी 2276–3सी कही जा रही वस्तु सर्पिल आकाशगंगा एनजीसी 2276–3सी के पास मिला है, जो पृथ्वी से 10 करोड़ प्रकाश वर्ष दूर है।

एनजीसी 2276–3सी को अंतरिक्ष विज्ञानी 'इंटरमीडिएट–मास ब्लैक होल' (आईएमबीएच) कह रहे हैं। ब्रिटेन की 'यूनिवर्सिटी ऑफ डुरहम' के वैज्ञानिक टिम रॉबर्ट ने कहा कि अंतरिक्ष विज्ञानी बड़ी कौतुहलता से इस मध्यम आकार के ब्लैक–होल का अध्ययन कर रहे हैं। उसके अस्तित्व के संकेत मिले हैं, लेकिन आईएमबीएच ब्लैक–होल परिवार के एक ऐसे सदस्य के रूप में प्रकट हुआ है, जो गुमनामी में ही रहना चाहता है।

अध्ययन का नेतृत्व कर रहे हार्वर्ड–स्मिथसोनियन सेंटर फॉर एस्ट्रोफिजिक्स के मार मेजकुआ ने कहा कि जीवाश्म विज्ञान की तरह ही हमें भी आकाशगंगा में कई बार अपनी खोजों की गहराई में जाना पड़ता है, जो यहाँ से करोड़ों प्रकाश वर्ष दूर हैं।

कई वर्षों से अंतरिक्ष विज्ञानियों ने छोटे ब्लैक–होल के अस्तित्व के निर्णायक प्रमाण ढूंढे हैं जो सूर्य के द्रव्यमान से पांच से 30 गुना ज्यादा द्रव्यमान वाले हैं। आईएमबीएच के महत्वपूर्ण होने का एक कारण यह है कि यह उस उत्पत्ति का आरंभ हो सकते हैं, जिससे ब्रह्माण्ड में विशालकाय ब्लैक होल का निर्माण हुआ है। (एजेंसी)

वर्ग पहेली

प्रस्तुति : विकास अरोड़ा (रेवाड़ी)

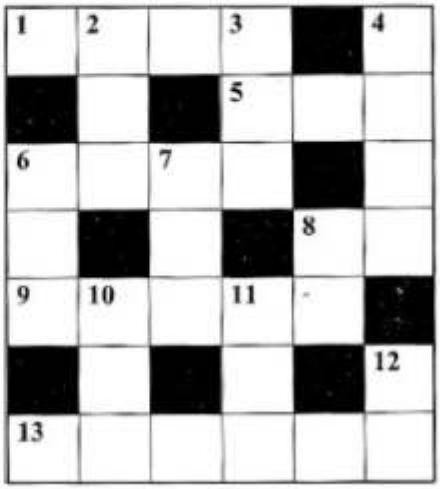

बाएं से दाएं →

1. भारत का जो पड़ोसी देश अपना स्वाधीनता दिवस 14 अगस्त को मनाता है।
5. जिस देश की राजधानी का नाम कुवैत सिटी है।
6. स्वतंत्र भारत के पहले गवर्नर .....चक्रवती राजगोपालाचारी थे।
8. नारी का पुल्लिंग।
9. महात्मा गाँधी के सहयोगी..... बजाज ने उन्हें सेगौन गाँव उपहार में दिया था जिसे बाद में सेवाग्राम का नाम दिया गया।
13. अहमदाबाद और गुरदासपुर में से जो शहर पंजाब में है।

ऊपर से नीचे ↓

2. कृषक का एक पर्यायवाची शब्द।
3. इस पंक्ति में छुपा एक पांडव का नाम ढूंढिए: कल रोहन कुलपति से मिला था।
4. जिस महीने की पाँच तारीख को शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है।
6. जलज और जलद में से जो कमल के फूल का पर्यायवाची शब्द है।
7. बेमेल शब्द छांटिए : चम्मच, रसना, पतीला, कटोरी।
8. रामायण में वर्णित रामसेतु ..... और नील की देखरेख में बनाया गया था।
10. शुद्ध शब्द छांटिए : (मन्दिर / मन्दीर)
11. लाओस और लीबिया में से जो देश एशिया महाद्वीप में है।
12. भारत का सबसे बड़ा रेगिस्तान।

(वर्ग पहली के उत्तरी इसी अंक में हैं)

कविता : कमल सिंह चौहान

गरमी का डंडा

चीं चीं करती चिड़िया आई,
पानी की बूँदें शरमाई।
तोता भी टें टें कर बोला,
सब देखो अब गरमी आई।

पानी है मटके का ठंडा,
सूरज की गर्मी का डंडा।
फ्रिज कूलर की लग बैठी है,
गरम हवा ने धूम मचाई।

पंक्षी हैं किलकारी करते,
बैठे पेड़ पर आहें भरते।
कोयल कूहू कूहू कर गाती,
लू लपट ने सीटी बजाई।

धरती माता सबको झेले,
बच्चे भी गरमी में खेलें।
सब ऋतुएं लगती प्यारी,
धूम मचाती गरमी आई।

सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी

सभी प्रश्नों के उत्तर 'य' अक्षर पर खत्म होते हैं। पैन या पेन्सिल उठाइए और प्रश्नचिन्ह के बाद उत्तर लिखते जाइए।

प्रश्न 1. शिलांग किस भारतीय राज्य की राजधानी है? ... य

प्रश्न 2. ब्रह्म समाज की स्थापना किसने की? ... य

प्रश्न 3. भगवान विष्णु के अवतारों में पहला अवतार कौन–सा था? य

प्रश्न 4. बुकर पुरस्कार प्राप्त करने वाली पहली भारतीय महिला कौन है? ... य

प्रश्न 5. रामचरितमानस में अयोध्या कांड के बाद कौन–सा कांड आता है? ... य

प्रश्न 6. 'वार एण्ड पीस' नामक पुस्तक किसने लिखी? ... य

प्रश्न 7. किस स्वतंत्रता सेनानी को 'पंजाब केसरी' के नाम से भी जाना जाता है? ... य

प्रश्न 8. भारत का राष्ट्रीय पक्षी मोर भगवान शंकर के किस पुत्र का वाहन है? ... य

प्रश्न 9. बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना किसने की? ... य

प्रश्न 10. मशहूर लेखक प्रेमचंद का असली नाम क्या था? ... य

प्रश्न 11. किस पर्वत श्रृंखला से गंगा और ब्रह्मपुत्र जैसी नदियाँ निकलती हैं ? ...य

प्रश्न 12. युद्ध स्थल पर गए बिना महाभारत युद्ध का हाल धृतराष्ट्र को किसने सुनाया था? .... य

प्रश्न 13. सीता जी की खोज में गए भक्त हनुमान ने रावण के किस पुत्र का वध किया था? ... य

प्रश्न 14. हिन्दू किस पशु को माता समान मानते हैं? ... य

(सही उत्तर किसी अन्य पृष्ठ पर देखें)

कहानी : साबिर हुसैन

मत बोलो

पलटू खरगोश झाड़ी में बैठा सोच रहा था कि अब वह क्या करे। दूसरे खरगोशों की तरह दूब–घास खाकर झाड़ी में सो जाना पलटू को पसंद नहीं था। वह कुछ न कुछ करता ही रहता था। यह अलग बात है कि करने के नाम पर वह दूसरों को परेशान ही करता। पलटू जब किसी से बोलता तो ऐसी बात कहता जो दूसरों को बुरी लगे।

पलटू खरगोश का पड़ोसी किट्टू खरगोश था। वह उसे समझाता कि वह दूसरों को परेशान न किया करे, कड़वा न बोला करे परन्तु पलटू पर उसकी बात का कोई असर नहीं होता।

उस दिन एक पेड़ पर कालू कौआ बैठा कांव–कांव कर रहा था। वह डाल पर बैठा था। उसके नीचे पलटू खरगोश बैठा था।

–अरे ओ कलुवे चुप कर, खाली कांव–कांव कर रहा है।– पलटू कालू कौए से बोला।

पलटू की बात सुनकर कालू कौए को गुस्सा आ गया। वह पलटू पर चोंच मारने झपटा लेकिन पलटू उस दिन झाड़ी में घुस कर बच गया था।

उलटा–सीधा बोलने के कारण कई बार मुसीबत में भी फंस चुका था। एक दिन वह बड़े बरगद के पेड़ के पास वाले मैदान में घास खा रहा था तभी उधर से गज्जू हाथी निकला। उसे देखते ही आदत के अनुसार पलटू चीख कर बोला– मोटे तुम भी मूर्ख हो। इतनी बड़ी खोपड़ी में अक्ल तो है ही नहीं। देख रहे हो कि मैं यहाँ घास खा रहा हूँ, तब भी सिर पर चढ़ते चले आ रहे हो।

पलटू की बात सुनकर गज्जू रूक गया। उसने अपनी सूंड से पलटू को पकड़ लिया। तब पलटू की समझ में आया कि आज वह अपनी कड़वी ज़बान के कारण मुसीबत में फंस गया है।

–मैं तो मजाक कर रहा था।– पलटू जल्दी से बोला।

–मैं भी तो थोड़ा मजाक कर रहा हूँ।– कहते हुए गज्जू ने पलटू को एक तरफ फेंक दिया।

पलटू दूर जा गिरा, उसके चोट लग गई थी। दर्द से कराहता–रोता किसी तरह वह अपने घर आ गया। किट्टू ने पलटू के दवा आदि लगाई थी। जब तक पलटू ठीक नहीं हुआ, किट्टू ही उसके लिए दवा और गाजरे लाता रहा। आखिर पलटू ठीक हो गया।

पलटू झाड़ी में से बाहर निकाला और उछलता–कूदता एक ओर चल दिया। पेड़ की टहनी पर मोलू बंदर बैठा था। पलटू वहाँ रूक गया।

–मूर्ख बंदर, क्यों उछल–कूद कर रहा है, चुप बैठ।– पलटू तेज स्वर में बोला और एक तरफ भागा। वह जानता था कि उसकी बात से मोलू बंदर को गुस्सा जरूर आ जाएगा।

पलटू की बात सुनकर मोलू बंदर को गुस्सा आ गया। वह पलटू के पीछे दौड़ पड़ा। परन्तु थोड़ी देर बाद मोलू बंदर पेड़ पर आकर आराम से बैठ गया।

दूसरे दिन पलटू ने मोलू को फिर परेशान करने व मूर्ख बनाने की सोची। पलटू मोलू के पास आकर बोला– मोलू भाई। तुम्हें सुनारी वन में लालू बंदर ने तुरन्त बुलाया है।

मौनू तुरंत सुनारी वन चला गया। वहाँ पहुँचकर उसने लालू से बुलाने का कारण पूछा तो लालू ने बताया कि उसे तो पलटू खरगोश बहुत दिनों से मिला ही नहीं।

मोलू को समझ आ गया कि पलटू खरगोश ने उसे मूर्ख बनाया है। तभी तो पलटू उसे 'मूर्ख बंदर' कहता है। बस फिर क्या था, मोलू उसकी तलाश में रहने लगा।

एक दिन भागते हुए पलटू जैसे ही एक बिल में घुसने लगा। मोलू बंदर ने उसे पकड़ लिया।

–बहुत परेशान करते हो, अब मैं तुम्हें सजा दूँगा।– कहते हुए मोलू ने पलटू को एक पेड़ की डाल पर बैठा दिया।

–मुझे नीचे उतार दो, अब मैं कभी परेशान नहीं करूंगा।– पलटू बोला। लेकिन मोलू उसे वहीं छोड़ कर चला गया।

पलटू रोते हुए जोर–जोर से 'बचाओ–बचाओ...' चिल्लाने लगा।

उसकी चीख सुनकर कई खरगोशों के साथ किट्टू खरगोश भी वहाँ आ गया। तब तक कालू कौआ भी आ गया।

'आज फंस गये हो, अब बताऊँगा।' कहते हुए कालू उड़–उड़ कर पलटू को चोंच मारने लगा। तभी दूसरी डाल पर लिपटे अजगर सांप

ने खरगोश को देखा तो वह उसे खाने के लिए उसकी ओर रेंगने लगा।

बढ़ रहे अजगर को किट्टू खरगोश ने देख लिया। वह समझ गया कि अगर पलटू को पेड़ से नीचे नहीं उतारा गया तो उसे अजगर खा जाएगा या पेड़ से गिरकर वह मर जाएगा। वह तुरन्त ही जग्गू हाथी के पास पहुँचा और उसे बताया कि पलटू खरगोश की जान खतरे में है। उसे मोलू बंदर ने पेड़ पर बैठा दिया है। वहाँ अजगर उसे खा जाएगा। पलटू को नीचे उतार दो।

—मन तो नहीं होता उसे बचाने का क्योंकि वह बहुत बुरा है लेकिन तुम्हारी बात मान कर चल रहा हूँ।— कहते हुए जग्गू हाथी किट्टू के साथ आ गया।

कालू कौए ने चोंच मार कर पलटू की हालत खराब कर दी थी और अजगर भी पलटू की ओर बढ़ रहा था।

गज्जू हाथी ने अपनी सूंड से पलटू को पेड़ के नीचे उतार दिया। पलटू को अपनी करनी का फल मिल गया था। उसने गज्जू हाथी और किट्टू खरगोश से अपने किए की क्षमा मांगी और आगे से किसी को भी परेशान नहीं करने की कसम खाई।

जानकारी (आलेख) : दीपांशु जैन

रंगीन संसार

तितलियों का

मनभावन रंग बिरंगी तितली देखते ही सबका मन प्रफुल्लित हो उठता है। यह छोटा–सा जीव अपने आकर्षक, चमकदार चटख रंगों से सजा हुआ जब खूबसूरत फलों पर मंडराता है तो बच्चों के साथ–साथ बड़ों का मन भी उसे पकड़ने के लिए लालायित हो उठता है।

जीव–जगत के 'लेपीडाप्रेटा' समूह में तितलियों को रखा जाता है। इस समूह में कुल एक लाख चालीस हजार प्रकार की प्रजातियों में से अधिक हिस्सा शलभ अथवा मॉथ के रूप में पाया जाता है तथा तितलियों की कुल जातियों की संख्या 25000 के करीब पाई गई है।

यह तो आप जानते हैं कि तितली का जन्म एक प्रकार के केटरपिलर से होता है। एक बार अण्डों से बाहर निकलने के बाद ये केटरपिलर पत्तों को चबाना शुरू कर देते हैं। पालिफेमस मॉथ के लार्वा को दुनिया का सर्वाधिक पेटू जीव कहा जाता है। उत्तरी अमेरिका में पाए जाने वाला यह लार्वा अपनी जिंदगी के प्रथम 48 घंटों में ही अपने वजन से 86000 गुना भोजन चट कर जाता है। तौबा–तौबा! कितना पेटू जीव होता है यह। अगर यही तुलना हम एक सात पौण्ड वाले नवजात शिशु से करें तो इसका मतलब यह होगा कि बच्चा सिर्फ दो दिन में 301 टन भोजन अपने पेट में डाल ले।

आगे पढ़ने से पहले मॉथ और तितली का फर्क भी जान लें। इन दोनों जीवों में हमें भ्रम नहीं होना चाहिए। एक ही समूह में रहते हुए भी इनकी दिनचर्या अलग–अलग होती है। मॉथ या शलभ के शरीर पर बाल होते हैं। इसका शरीर भी तितली की अपेक्षा अधिक मजबूत होता है। तितली दिनचर होती है जबकि मॉथ अधिकतर रात्रि–चर होते हैं।

ग्रेट ब्रिटेन एवं केनरी द्वीप समूह में पाया जाने वाला स्टेअन्टान तथा स्टिगमेला रिडिक्यूलोसा शलभ मात्र 0.08 इंच लम्बा–चौड़ा होता है। 'इवार्फ ब्ल्यू नामक तितली जो दक्षिण अमेरिका में पाई जाती है– के पंखों की चौड़ाई भी सिर्फ 0.55 इंच होती है। यह विश्व की सबसे छोटी तितली है। इसके विपरीत 'क्वीन एलेकजेन्ड्रा बर्ड विंग' नामक तितली सबसे बड़ी होती है। पपुआ न्यूगिनी में पाई जाने वाली इस तितली के एक पंख से दूसरे पंख तक की चौड़ाई 11 इंच से अधिक होती है। आपने अब तक कितनी बड़ी तितली देखी है? सोलोमन द्वीप समूह में पाई जाने वाली अर्निथोप्टेरिया अलोरिया नामक तितली की प्रजाति दुनिया में बहुत कम पाई जाती है। इसकी सिर्फ बारह जातियां ही मिलती हैं। सन् 1966 में ऐसी ही एक तितली की नीलामी 2100 डॉलर में हुई थी।

तितलियों की घ्राण–शक्ति बड़ी तीव्र होती है। इनकी दूर–दृष्टि भी जीव–जगत में बहुत अधिक है। ये नौ फीट की दूरी तक देख सकती है। तितलियों को अपना प्रिय भोजन मकरंद प्राप्त करते समय कोई अन्य जन्तु इन्हें मारकर खा नहीं जाए इसलिए प्रकृति ने इन्हें कुछ विशेष रंग भी प्रदान किए हैं। 'डेडलीफ' तितली के पंख फैले होने पर चटकीले रंगों से युक्त दिखाई देते हैं किन्तु समेटने पर यह एक मुरझाई पत्ती के जैसी दिखाई देती है। शिकारी जन्तु इसे मात्र एक पत्ती जानकर आगे बढ़ जाता हैं। कुछ तितलियों के पंखों के पीछे की तरफ दो काले धब्बे होते हैं, जो शत्रु को आंख की तरह दिखाई पड़ते हैं। जब शत्रु इस झूठी आंख पर आक्रमण करता है, उसे अपनी असली आंख से देख लेती है और बचकर भाग निकलती है। 'क्लाउडेड यलो' नामक तितली इस प्रकार अपना बचाव करती है।

प्राकृतिक शत्रु से तो तितली अपना बचाव कर सकती है परन्तु मानव अपने स्वार्थ के लिए इनका विनाश करने पर तुला है। कितना अच्छा हो अगर हम तितली को पकड़ कर संजोने के बजाए उसे स्वच्छंद विचरण करने दें।

बाल कहानी : राजकुमार जैन 'राजन'

टिंकू की धैर्य परीक्षा

चंपक वन में चक्रम नामक हाथी कपड़े का बहुत बड़ा व्यापारी था। उसे सब चक्रम सेठ के नाम से जानते थे। उसकी कपड़ों की बहुत बड़ी दुकान थी, जहाँ हर प्रकार का कपड़ा उपलब्ध था। चंपक वन के जानवर ही नहीं पड़ौसी वनों के जानवर भी वहाँ कपड़े खरीदने आते थे।

चक्रम सेठ बहुत दयालु तथा नेक दिल था। क्रोध तो जैसे उसको आता ही नहीं था। ग्राहक चाहे कैसा भी हो, वह सबसे हँसकर बात करता था। इस कारण उसकी दुकान पर हमेशा ग्राहकों की भीड़ लगी रहती थी।

अब चक्रम हाथी पचास की उम्र पार कर गया था। ग्राहकी काफी बढ़ जाने के कारण अन्य कामों के लिए उसे समय नहीं मिल पाता था।

इधर शादियों का मौसम आ गया। इस बार चक्रम सेठ ने कई तरह के कपड़े थोक में मंगवा लिए थे। ग्राहकों की भीड़ और स्वयं की उम्र देखकर चक्रम हाथी ने एक दिन सोचा– 'एक नौकर रख लूं तो काम में मेरी मदद हो जाएगी।'

उसने 'जंगल टाइम्स' में विज्ञापन दे दिया तथा अपने जान–पहचान वालों को भी कह दिया कि उसे एक ऐसा नौकर चाहिए जो मेहनती, ईमानदार, कार्यकुशल एवं धैर्यवान हो। चक्रम ने धैर्यवान होने पर ज्यादा जोर दिया क्योंकि उसकी दुकान पर बहुत से ऐसे ग्राहक भी आते थे जो लेते–देते कुछ नहीं थे, मगर एक–दो घण्टे तक तरह–तरह के कपड़े निकलवाकर देखते और मोल–भाव करते रहते थे।

शीघ्र ही जम्बू भालू, गुलगुल लोमड़, लम्बू जिराफ, हीनू हिरण एवं टिंकू बंदर सहित कई अन्य जानवर चक्रम हाथी के पास नौकरी के लिए आए। सभी जानवरों को देख–परख कर और टिंकू बंदर को योग्य समझकर चक्रम सेठ ने दुकान पर काम करने के लिए उसे रख लिया।

चक्रम सेठ ने उसे अपनी शर्त समझा दी– "देखो टिंकू, मैं तुम्हारी परीक्षा लूंगा, अगर तुम सफल हो गए तो तुम्हारी नौकरी पक्की।" पर चक्रम ने यह नहीं बताया कि वह उसकी परीक्षा कब और कैसे लेगा?

टिंकू बंदर काम पर आ गया। बहुत निष्ठा से वह दुकान का काम संभालने लगा। दिन भर जंगल के जानवरों की भीड़ रहती। टिंकू को कपड़ा बेचने में मजा आने लगा। शाम को वह सारे बिखरे कपड़ों को सलीके से जमा देता।

चौथे दिन चक्रम सेठ ने कहा– "टिंकू बेटा, मुझे कपड़े खरीदने के लिए शहर जाना है, मैं कल सुबह ही चला जाऊंगा। तुम अकेले दुकान संभाल लोगे न...?

"जी सेठ जी", टिंकू ने जवाब दिया– "आप निश्चिंत होकर जाइए, मैं सब संभाल लूंगा।"

अगले दिन टिंकू, दुकान पर बैठा कपड़ों को करीने से सजा रहा था तभी सिर पर टोपी, आंखों पर चश्मा, बदन पर अचकन पहने और हाथ में छड़ी लिए जम्बू हाथी ने दुकान में प्रवेश किया।

"पधारिए श्रीमान, क्या चाहिए आपको?" टिंकू ने नम्रता से पूछा।

"मेरे बच्चे की शादी है," जम्बू हाथी ने गद्दे पर बैठते हुए कहा–

"उसके लिए बढ़िया कोट सूट के कपड़े के अतिरिक्त परिवार के अन्य सदस्यों के लिए भी अच्छे कपड़े चाहिए।"

"अभी दिखाता हूँ" कहकर टिंकू ने कपड़े के कुछ थान निकाले और खोल–खोल कर जम्बू को दिखाने लगा। इस बीच उसने पास की दुकान से जम्बू के लिए 'कोल्ड ड्रिंक' भी मंगवा लिया।

जम्बू हाथी कपड़े को उलटता–पलटता, भाव पूछता और नापसंद करके एक तरफ हटाता जाता। टिंकू फिर कोई नये डिजाइन का कपड़ा निकालता और जम्बू को दिखाता। इस बीच दुकान पर आने वाले अन्य ग्राहकों को भी कुशलतापूर्वक निबटा रहा था। जम्बू ने पचासों तरह के कपड़े देखे पर उसे कोई भी पसंद नहीं आ रहा था।

फिर टिंकू ने धैर्य से मुस्कराते हुए नया थान लाकर खोला और जम्बू को दिखाया– "साहब, यह खास 'वैरायटी' है, वी.आई.पी. लोगों के लिए। बहुत बढ़िया सूट बनेगा।"

करीब दो घण्टे तक टिंकू ने कई तरह के कपड़े दिखा दिये। कपड़ों का ढेर लग गया पर जम्बू को कोई कपड़ा पसंद नहीं आया।

तब टिंकू ने पूछा– "जम्बू जी, आप किस तरह का कपड़ा चाहते हैं? बताइये तो जरा।"

"तुम्हारी दुकान पर मेरी पसंद का कपड़ा है ही नहीं।" यह कहकर जम्बू हाथी उठकर जाने लगा तो टिंकू ने कहा– "आपको इतनी देर नाहक कष्ट हुआ। अगर फिर कभी आपको कपड़े खरीदने हों तो आप हमारी दुकान पर जरूर आइएगा। आपका स्वागत है।"

टिंकू बंदर के इस व्यवहार से जम्बू हाथी अचंभित रह गया। उसे टिंकू का धैर्य देखकर आश्चर्य हो रहा था कि इतनी देर तक परेशान होने के बाद भी उसे जम्बू पर जरा भी गुस्सा नहीं आया था। चक्रम हाथी टिंकू के धैर्य की परीक्षा ले रहा था। वह टिंकू की कार्यकुशलता देखकर बहुत

प्रसन्न हुआ। उसने अपना चश्मा तथा टोपी उतारते हुए कहा– "शाबाश बेटे, मुझे तुम्हारे जैसे कार्यकुशल और धैर्यवान नौकर की ही जरूरत थी। व्यापार में धैर्य और कार्यकुशलता का होना बहुत जरूरी है।"

अपने मालिक को पहचानते ही टिंकू बंदर उनके चरणों में झुक गया।

चक्रम ने टिंकू बंदर को स्थायी तौर पर अच्छा वेतन तय कर अपनी दुकान पर रख लिया और रहने को एक मकान भी दे दिया।

बालगीत : घमण्डीलाल अग्रवाल

दर्पण का गीत

जैसा देखे, वही दिखाए–
दर्पण सच का साथ निभाए।
उजला मन होता दर्पण का,
गोरा तन होता दर्पण का।
नहीं कपट है, छल है थोड़ा,
जमा झूठ को देता कोड़ा।

जो सम्मुख हो उसको–
दर्पण सच का साथ निभाए।
चाहे कोई कितना भागे,
रूक जाता दर्पण के आगे।
आंख मिलाकर बातें करना,
निश्छलता की पोथी पढ़ना।

बच्चों जैसा हृदय लुभाए–
दर्पण सच का साथ निभाए।

करें स्वयं को दर्पण जैसा,
भागे अंदेशा ऐसा–वैसा।
माँ से लें खुलकर शाबाशी,
यह जीवन हो मथुरा–काशी।
इतनी–सी बस सीख सिखाए–
दर्पण सच का साथ निभाए।

जानकारी (लेख) : डॉ. विनोद गुप्ता

कबूतर को कैसे होता है दिशा ज्ञान

कबूतरों के दिशा ज्ञान को लेकर वैज्ञानिकों ने अनेक अध्ययन और परीक्षण किए हैं। कुछ वैज्ञानिकों का कहना है कि वे पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र के माध्यम से अपनी दिशा का ज्ञान कर लेते हैं। उनका यही दिशा ज्ञान उन्हें लंबी दूरी की यात्रा करने तथा वहाँ से सकुशल लौटने में मददगार होता है।

आधुनिक शोधों से पता चलता है कि कबूतर जब समूह में उड़ते हैं तो उनका नेतृत्व उन्हीं में से कोई एक अनुभवी कबूतर करता है। वह सबसे आगे चलता है और शेष सभी उसके पीछे।

प्रिंसटन यूनिवर्सिटी के शोधार्थी ने कबूतरों के समूह पर लगातार नजर रखी और पाया कि वहाँ सब कुछ बड़ी व्यवस्थित तथा तरतीब से चलता है। उनका तालमेल बड़ा गजब का होता है।

एक अन्य अध्ययन में बुजपेस्ट की एक यूनिवर्सिटी में कुछ कबूतरों पर जीपीएस यंत्र लगाकर छोड़ा गया तो उनमें से एक ही कबूतर टीम का बार–बार नेतृत्व कर रहा था। स्पष्ट है कि अनुभवी या जानकार कबूतर ही उड़ान की दिशा तय करता है। इसे तय करते समय उसका अनुभव काम आता है। इसके अलावा नेतृत्व को कबूतर अन्य साथियों को जिम्मेदारी का बटवारा भी कर देता है। मसलन कहाँ रूकना है, कहाँ खाना मिलेगा आदि। इन सबसे कबूतरों को लंबी उड़ान भरने में कोई परेशानी नहीं होती।

कुछ वैज्ञानिकों का कहना है कि सूर्य की सहायता से ये अपना मार्ग ढूंढ लेते हैं। ये सूर्य की स्थिति में होने वाले परिवर्तनों के आधार

पर दिशा पहचान लेते हैं। वे सभी दिशाओं में दूर–दूर तक देख सकते हैं। यही दृष्टि उड़ान में उनकी मदद करती है।

कबूतरों की उड़ान कई बातों पर निर्भर करती है। जैसे जलवायु, वायु का प्रवाह आदि। ठंडी जलवायु में ये अधिक क्षमता से उड़ते हैं लेकिन गर्म जलवायु में जल्दी थक जाते हैं।

ये अपने मूल स्थान को कभी नहीं भूलते। यदि किसी एक कबूतर को उसके घर से लकड़ी के संदूक में बंद करके सैकड़ों मील दूर आजाद छोड़ दिया जाए तो थोड़ी देर वह आसमान में चक्कर काटेगा तथा फिर अपने मूल स्थान की दिशा में पलट जाएगा तथा घर लौट आएगा।

जब संचार के साधन नहीं थे, तब कबूतर ही एकमात्र संदेशवाहक था। सेना में प्रशिक्षित कबूतरों का एक दल भी होता था जो जरूरी संदेश पहुँचाता था। द्वितीय महायुद्ध में तो सेनाओं द्वारा अपने गुप्त संदेश कबूतरों द्वारा ही नियंत्रण कक्ष तक पहुँचाए जाते थे। वाटरलू की लड़ाई जीतने का समाचार भी सर्वप्रथम कबूतर द्वारा ही दिया गया था।

अब से कोई दो हजार वर्ष पहले रोम में सेना कबूतरों से गुप्तचरी का काम लेती थी। फ्रांस के विद्रोह के दौरान भी संदेश पहुँचाने में कबूतरों ने काफी मदद की थी। बर्लिन और ब्रुसेल्स के बीच तो इसने टेलीग्राम तक पहुँचाए थे। नेपोलियन की पराजय की खबर भी सबसे पहले एक कबूतर ने ही दी।

अनमोल वचन

–प्रस्तुति : गुरचरण आनन्द

अहंकार मन को खा जाता है।
होश न हो तो जोश व्यर्थ है।
भूख न हो तो भोजन व्यर्थ है।
उधार व्यापार को खा जाता है।
गुस्सा अक्ल को खा जाता है।
लालच ईमान को खा जाता है।
परोपकार न करने वाले का तो जीवन ही व्यर्थ है।
चिंता आयु को खा जाता हैं।
रिश्वत इन्साफ को खा जाती है।
गुण न हो तो जीवन व्यर्थ है।
विनम्रता न हो तो विद्या व्यर्थ है।
उपयोग न आए तो धन व्यर्थ है।
साहस न हो तो हथियार व्यर्थ है।

भैया से पूछो

– नवीन कुमार (लखीमपुर)

प्रश्न : हमें 'धन निरंकार' कैसे व क्यों करनी चाहिए। करनी चाहिए तो उससे लाभ बतायें?

उत्तर : हर व्यक्ति में निराकार–परमात्मा विद्यमान है। चरणों को छूकर इस प्रभु–निराकार को हम धन्य कहते हैं। चरणों को छूकर हम अपने अहंकार को भी हटाने का कर्म करते हैं, इससे अहंकार का नाश होता है।

– वरिन्दर कालड़ा (मण्डी लाधुका)

प्रश्न : भैया जी! हम अपने मन (भावना) को किस तरह काबू में रख सकते हैं?

उत्तर : ज्ञानवान बनकर। बचपन से ही अपनी एक–एक कमी को छांटकर उसे दूर करने की प्रतिज्ञा करें व उन प्रतिज्ञाओं को निभाएं।

– रामशंकर गुप्ता (सदर बाजार, बिलासपुर)

प्रश्न : भैया जी! भगवान का दिव्य स्वरूप क्या है?

उत्तर : निराकार!

प्रश्न : सराहना करना कैसे सीखें?

उत्तर : मन से महसूस कर उचित शब्दों में व्यक्त कर।

– परविन्दर भद्दल (रोपड़)

प्रश्न : भक्ति करते समय इन्सान पर अहंकार क्यों हावी हो जाता है?

उत्तर : भक्ति तो अहंकार को भगाती है; हाँ जो लोग भक्ति का ढोंग रचते हैं उन्हें अहंकार अवश्य हो जाता है।

प्रश्न : संसार में सबसे कठिन काम क्या है?

उत्तर : सदाचारी बनकर जीवन जीना।

– गीतू खनेजा (कलानौर)

प्रश्न : हम सबका ध्यान इस निरंकार की ओर बढ़ता जाए इसके लिए क्या करना चाहिए?

उत्तर : सत्संग, सुमिरण, एकाग्रता तथा स्वज्ञान।

प्रश्न : किसी को बार–बार समझाने पर भी समझ न आये तो क्या करें?

उत्तर : उसका स्तर व अपनी योग्यता को आंक कर उचित संतुलन बनाकर समझाने का प्रयत्न करें।

– रमन चौधरी (बंगलुरू)

प्रश्न : सबसे बड़ा बल कौन–सा है?

उत्तर : 'स्व' का बल; आत्मविश्वास का बल।

प्रश्न : यदि कोई हमें कुछ कार्य सौंपे पर वह कार्य करने में हम असमर्थ हों तो हमें क्या करना चाहिए?

उत्तर : अपनी योग्यता को निष्पक्ष भाव से पहले परखें फिर स्पष्टतः दूसरे को बता दें कि 'यथायोग्य' कार्य करने पर भी आप कहाँ तक सफलता प्राप्त कर सकते हैं ताकि शेष कार्य बताने वाला कर पाये।

प्रश्न : आजकल सीधे–सादे व्यक्ति को लोग मूर्ख क्यों समझते हैं?

उत्तर : सीधा–सादा व्यक्ति यदि सजग नहीं होगा तो आजकल मूर्ख ही कहलायेगा क्योंकि भौतिक जगत की प्रगति की गति बहुत तेज हो चुकी है।

प्रश्न : जब हम सेवा करते हैं तब मन में क्या भाव होना चाहिए?

उत्तर : सम्पूर्ण समर्पण भाव।

प्रश्न : इन्सान का असली रूप क्या है?

उत्तर : निराकार।

प्रेरक प्रसंग : राधेलाल 'नवचक्र'

क्या श्रेष्ठ है ?

शकडाल कुम्भकार था। भाग्य पर उसकी गहरी आस्था थी। हर बात में वह भाग्य की दुहाई देता और पुरुषार्थ की उपेक्षा किया करता।

अपनी आस्था की पुष्टि के लिए एक बार वह भगवान महावीर के पास पहुँचा और फिर बोला, "भगवन् भाग्य ही सब कुछ होता है न!"

भगवान चुप रहे। शकडाल ने फिर पूछा, "भगवन, पुरुषार्थ से भाग्य श्रेष्ठ है न?"

इस बार भी कोई जवाब न पाकर शकडाल ने अपना सवाल फिर दोहराया, "भगवन्, भाग्य और पुरुषार्थ में क्या श्रेष्ठ है?"

भगवन् बोले, "अगर कोई तुम्हारी मिट्टी के बरतन को बिना वजह तोड़–फोड़ दे, कोई तुम्हारे धन को छीन ले या तुम्हारे परिवार के साथ दुर्व्यवहार करे तो तुम क्या करोगे?"

"मैं उससे लड़ पड़ूंगा। मारपीट कर बैठूंगा।" आवेश में आकर शकडाल बोला।

"भाग्य को श्रेष्ठ मानकर चुपचाप सब कुछ देखते तो नहीं रहोगे न?"

"बिल्कुल नहीं!" शकडाल के मुख से अनायास निकल पड़ा।

"फिर तुम्हीं बोलो– क्या श्रेष्ठ है– भाग्य या पुरुषार्थ?" भगवान ने आगे कहा, "याद रहे, पुरुषार्थ ही भाग्य को बनाता है। जैसा पुरुषार्थ, वैसा ही भाग्य होता है।"

शकडाल का भ्रम दूर हो गया। भाग्य और पुरुषार्थ का अन्तर्सम्बन्ध उसकी समझ में अब अच्छी तरह आ गया।

कहानी : डॉ. सेवा नन्दवाल

चीची चूहे में सब कुछ अच्छा था केवल एक आदत बुरी थी। अपनी चीज तो वह खूब संभालकर रखता जबकि दूसरों की चीज के प्रति घोर लापरवाही बरतता था। अपने खिलौनों को तो हाथ नहीं लगाने देता था और दूसरों के खिलौनों से खेलना चाहता था ताकि दूसरों के ही खिलौने खराब हों अपने नहीं। उसकी इस आदत से सब परेशान रहते थे।

एक बार चीची जंगल में खेल रहा था। उसने देखा कि गोगी खरगोश के पास एक नई प्रकार की गेंद है तो उसका मन ललचा गया। उसने गोगी के साथ खेलने की इच्छा व्यक्त की तो वह मान गया। खेलते हुए जब काफी देर हो गई तब चींची को याद आया कि माँ इंतजार कर रही होगी। उसने गोगी से कहा– दोस्त, अपनी गेंद एक दिन के लिए मुझे खेलने के लिए दे दो। मैं सुबह आकर लौटा दूँगा।– गोगी मान गया।

चींची घर पहुँचकर अपने छोटे भाई–बहनों के साथ गेंद खेलने लगा। भाई–बहनों को यह जानकर आश्चर्य हुआ कि आज चींची कोई

हिदायत नहीं दे रहा है कि यह गेंद जोर से मत फेंको। फूट जायेगी। उसके भाई–बहनों का आश्चर्य उस समय अपने आप कम हो गया जब उन्हें मालूम पड़ा कि यह गेंद चीं–चीं की नहीं बल्कि उसके दोस्त गोगी की है। दूसरों की वस्तु की तो वह वैसे ही परवाह नहीं करता था। चींचीं जब खेलते–खेलते थक गया तो उसने खेल बंद कर दिया। रात भी हो गई थी। खेल बन्द करने के बाद उसने गेंद को एक गड्ढे में छिपा दिया। अगले दिन सुबह सोकर उठा तो उसे गेंद की याद आई। वह दौड़ता हुआ उस गड्ढे के पास गया मगर गेंद वहाँ नहीं थी। वह धक् से रह गया। यहाँ–वहाँ ढूंढने पर गेंद तो मिली पर बिल्कुल बदली हालत में; टूटी–फूटी। वह रोता हुआ माँ के पास आया।

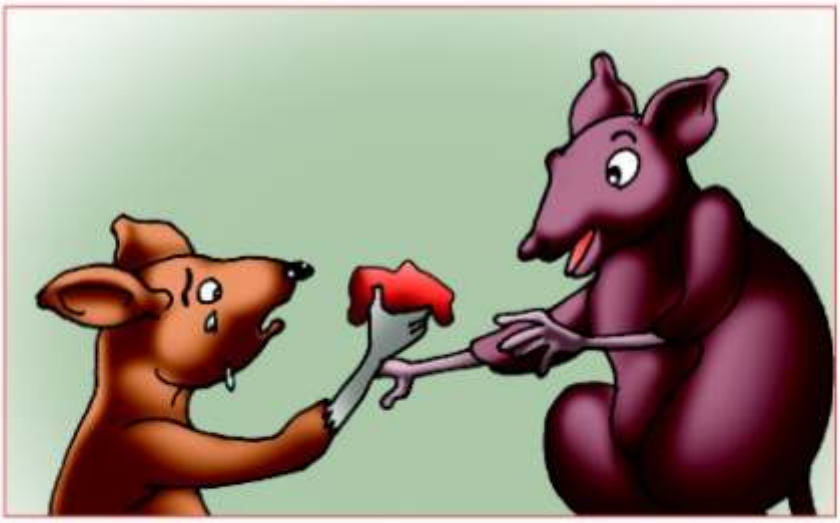

–क्या बात है बेटे?– माँ ने पूछा।

चींचीं ने रोते हुए बताया– कल रात मैंने एक गड्ढे में गेंद छिपाकर रखी थी। उसे किसी ने तोड़–फोड़ दिया।

माँ ने कह दिया– तो क्या हुआ?

चींचीं ने चिंतित स्वर में बताया– वह गेंद मेरे दोस्त गोगी की थी।

–एक बात बताओ क्या तुमने अपने खिलौने कभी वहाँ रखे थे?– माँ ने पूछा।

–नहीं माँ अपनी चीज तो मैं बहुत सम्भाल कर रखता हूँ।– चींचीं ने बताया।

–एक बात और; अपने खिलौनों से भी तुम वैसे ही खेलते हों जैसे कल तुम इस गेंद से खेल रहे थे?– माँ ने फिर पूछा।

नहीं माँ, तुमने ही तो कहा है कि चीज संभाल कर रखा करो इसलिए अपनी गेंद से धीरे–धीरे खेलता हूँ ताकि फूट न जाए... पर यह तो गोगी की थी... संकुचाते हुए चींचीं बोला।

माँ ने समझाते हुए कहा– एक बात याद रखो बेटे। अपनी चीज की हिफाजत करना अच्छी बात है पर दूसरों की वस्तु की हिफाजत न करना बुरी बात है। दूसरे की वस्तु की हिफाजत तो अपनी वस्तु से ज्यादा करनी चाहिए नहीं तो दोबारा तुम पर कोई विश्वास नहीं करेगा।

–ठीक है माँ गलती हो गई। क्षमा करो, आगे से ख्याल रखूँगा... पर गोगी मुझे मारेगा तो...?– अपने नन्हें कानों को पकड़ता चींचीं बोला।

–नहीं वह नहीं मारेगा। यह रही उसकी गेंद सही सलामत। हमने तुम्हें सबक सिखाने के लिए इस गेंद को निकाल लिया था और एक टूटी–फूटी गेंद वहाँ छुपा दी थीं जहाँ तुमने यह गोगी की गेंद छिपाई थी।– माँ ने हँसते हुए कहा।

–ओह माँ! तुम कितनी अच्छी हो।– चींचीं ने कहा और गेंद को लुढ़काता हुआ गोगी के पास जाने लगा।

सामान्यज्ञान प्रश्नोत्तरी के उत्तर :

1. मेघालय, 2. राजा राम मोहन राय 3. मत्स्य अवतार 4. अरुंधती राय 5. अरण्य काण्ड 6. लियो टालस्टाय ने 7. लाला लाजपत राय को 8. कार्तिकेय का 9. पंडित मदन मोहन मालवीय 10. धनपत राय 11. हिमालय से 12. संजय ने 13. अक्षय का 14. गाय को।

जानकारी : कैलाश जैन, एडवोकेट

इसे कहते हैं स्मरण-शक्ति!

अनगिनत यादों और जानकारियों का एक रहस्यमय खजाना है– हमारा मस्तिष्क! इस मायावी मस्तिष्क की असंख्य क्षमताओं में 'स्मरण–शक्ति' का महत्वपूर्ण योगदान है। आज हमारे वैज्ञानिक याद्दाश्त के उलझे रहस्यों को सुलझाने में लगे हुए हैं। आखिर कोई बात या घटना हमें क्यों और कैसे याद रह जाती है? क्यों छोटी–सी बात का चित्र बरसों तक हमारे मानसपटल पर ज्यों का त्यों बना रहता है? इन सारे सवालों का जवाब है– मनुष्य की स्मरण शक्ति। स्मरण–शक्ति के अनबूझे रहस्यों पर से अभी कई पर्दे उठने बाकी हैं।

स्मरण–शक्ति सामान्यतः प्रत्येक मनुष्य में पाई जाती है, किंतु स्मरण–शक्ति की तीव्रता और विलक्षणता के मापदंड प्रायः व्यक्तिशः अलग–अलग होते हैं। कुछ लोगों में स्मृति की प्रखरता इतनी व्यापक और तीक्ष्ण होती है कि उसे चमत्कार समझा जाता है। अक्सर विलक्षण स्मरण–शक्ति सम्पन्न कुछ ऐसे व्यक्तियों से मिलवाते हैं, जिनकी याददाश्त के हैरत–अंगेज कारनामे देखकर लोग दांतों तले अंगुली दबा लेते हैं।

मिस्र के सुलतान नासिर अद्भुत स्मरण–शक्ति के धनी थे। उनके पास बीस हजार गुलाम थे। सुलतान नासिर को उनमें से प्रत्येक का नाम, जन्म–स्थान, जाति, उम्र और उनके खरीदे जाने का स्थान, समय और राशि जुबानी याद थे।

प्राचीन ग्रंथों में राजा भोज के राज–दरबार के श्रुतिधर नामक दरबारी का वर्णन मिलता है। श्रुतिधर की स्मृति इतनी विलक्षण थी कि वह वह एक घड़ी (चौबीस मिनट) तक सुने गए किसी भी प्रसंग या धर्मग्रंथ को तत्काल अक्षरशः सुना सकता था।

दक्षिण अफ्रीका के फील्डमार्शल जनरल स्मट्स साहित्यानुरागी व्यक्ति थे। उनके पास उच्च कोटि की करीब दस हजार पुस्तकों का विशाल भंडार था। स्मट्स को अपने पुस्तकालय की समस्त पुस्तकों का एक–एक शब्द कंठस्थ था। वह पुस्तक के किसी भी अंश की पृष्ठ संख्या और अन्य विवरण तत्काल बता सकते थे। इसी प्रकार जर्मनी के म्युनिख

शहर के राष्ट्रीय पुस्तकालय के निदेशक जोनफ वर्नवर्ड डोकन संसार की बीस से अधिक भाषाओं के ज्ञाता थे। नौ भाषाओं पर तो उनका प्रमाणिक तौर पर अधिकार था। जोनफ काफी व्यस्त व्यक्ति थे। उन्हें काफी पत्राचार करना पड़ता था। उनके पास नौ विभिन्न भाषाओं के अलग–अलग सचिव थे। जोनफ अपनी सभी नौ सचिवों को एक साथ बैठाकर नौ विभिन्न भाषाओं में पत्र लिखवाते थे। उन्हें 'बाइबिल' पूरी कठंस्थ थी।

प्रख्यात लेखक टी.ई. लारेंन की प्रसिद्ध पुस्तक 'द सिक्स पिलर्स ऑफ विज़डम' की पूरी पाण्डुलिपी खो गई। लेकिन लारेंस ने वापस पूरी पुस्तक को याद्दाश्त से लिख लिया और समय पर प्रकाशक को पाण्डुलिपी दे दी।

एक बार जर्मनी के हेगर शहर के एक बड़े बैंक में हुए भयंकर अग्निकांड में बैंक के सारे रिकार्ड और कागजी नोट जलकर भस्म हो गए। दूसरे दिन बैंक के आगे ग्राहकों की भारी भीड़ जमा हो गई और जमाकर्ता बैंक के अधिकारियों से हिसाब मांगने आये। रिकार्ड के बिना जमाकर्ताओं के दावों का निपटारा असंभव कार्य था, किन्तु ऐसी विषम परिस्थिति में बैंक में कार्य करने वाले एक क्लर्क ने सारी समस्या को आसानी से हल कर दिया। उसने बैंक के दो हजार से भी अधिक ग्राहकों के खातों और जमा–राशि का हिसाब अपनी विलक्षण याद्दाश्त से बिल्कुल जुबानी बता दिया। सभी ग्राहक उसके द्वारा बताए गए हिसाब से पूर्णतः संतुष्ट थे। इस क्लर्क का नाम बर्थोल्ड नीव्हूर था। इस कार्य के पुरस्कार–स्वरूप उस क्लर्क को उस बैंक–समूह का डायरेक्टर बना दिया गया।

इंग्लैण्ड के निवासी फिल्डिंक जन्मांध थे। उन्हें दस हजार व्यक्तियों के नाम–पते और उनका व्यवसाय जुबानी याद थे। इनमें से वह प्रत्येक व्यक्ति की आवाज सुनकर उनका नाम बता सकते थे। इसी प्रकार इंग्लैण्ड के ही एक पोस्टमैन मांटुगुनस ने पच्चीस वर्ष तक घर–घर जाकर डाक–वितरण का कार्य किया, जबकि वह जन्म से ही नेत्रहीन था। मात्र अपनी स्मरण–शक्ति के आधार पर बिना गलती किए वह पच्चीस साल तक पत्र आदि वितरण का कार्य करता रहा।

फ्रांस के प्रधानमंत्री लियान मैम्ब्रेज अनूठी याद्दाश्त के मालिक थे। विरोधी दल के नेताओं द्वारा संसद में दिए गए भाषणों का एक–एक शब्द

उन्हें जुबानी याद था। संसद में पेश किए गए तमाम पिछले बजटों की एक–एक बात मय आंकड़ों के वह बता सकते थे। फ्रांस के ही मिलेट्री होटल का एक बैरा फैलिक्स मार्टिनी अपनी याद्दाश्त के कारण आज भी याद किया जाता है। सेना के बारे में फ्रांस सरकार द्वारा 1856 में प्रकाशित विस्तृत रिपोर्ट का प्रत्येक अंश मार्टिनी को कठंस्थ था। रिपोर्ट में प्रकाशित सेना के 26,208 अफसरों के संपूर्ण विवरण मार्टिनी तुरंत यथावत बता सकता था।

इंग्लैण्ड के मि. लेसली वेल्च ग्रेट ब्रिटेन में पिछले डेढ़ सौ वर्षों में हुई किसी भी खेल–कूद की घटना का पूरा ब्यौरा आंकड़ों सहित दे सकता है। जब लेसली 22 वर्ष का नवयुवक था, तब उसकी स्मरण–शक्ति बहुत कमजोर थी। उसने स्मरण–शक्ति को तीव्र करने का प्रयास किया और आज वह अपनी अद्भुत स्मरण–शक्ति के बूते पर ब्रिटेन ही नहीं, समूचे विश्व में चर्चित है। यह फुटबाल, तैराकी, घुड़दौड़, टेनिस आदि किसी भी खेल के किसी भी मैच का वर्णन कर सकता है।

ल्यूमिथियन नामक एक अल्पायु बालक विश्व की किसी भी भाषा के गद्य व पद्य को सिर्फ एक बार सुन कर उसी भाषा में पूर्ण विराम, अर्द्ध विराम तक की त्रुटि किए बिना दुहरा सकता था।

विलक्षण स्मरण–शक्ति का धनी होना व्यक्ति के बुद्धिमान होने से कोई सीधा संबंध नहीं रखता। यह तथ्य मस्तिष्क पर किए जा रहे व्यापक अनुसंधानों से सामने आया है। कुछ अत्यंत कुशाग्र–बुद्धि दार्शनिकों और वैज्ञानिकों को भुलक्कड़पन का रोग होता है, जबकि कई तीक्ष्ण स्मरण–शक्ति वाले व्यक्तियों की बुद्धि औसत से भी कम पाई गई है। उदाहरणार्थ एक रूसी पत्रकार सोलोमन विनेयामियोव की स्मरण–शक्ति इतनी गजब की थी कि वह बरसों पहले सरसरी तौर पर पढ़े गए रेलवे टाईम–टेबल को ज्यों का त्यों दोहरा सकता था। रूसी वैज्ञानिक एलेक्जेंडर ल्यूरिया ने सोलोमन की जांच करने के बाद पाया कि वह स्मरण–शक्ति के क्षेत्र में तो विलक्षण हैं किंतु वैसे एक औसत दर्जे का पत्रकार हैं। जब सोलोमन के आई.क्यू. का परीक्षण किया गया तो वह औसत दर्जे भी नीचे निकला।

स्मरण–शक्ति के चमत्कार अभी भी रहस्यावरण में ढके हुए हैं। परत–दर–परत उघड़ने पर ही इस रहस्य की तह में पहुँचा जा सकेगा।

बाल कविता : डॉ. बृजनंदन वर्मा

पौधे

जंगल के पौधों से सीखो,
आपस में मुस्काना।

पेड़ हमें लकड़ी देता है।
खट्टे–मीठे फल देता है।।
प्राण वायु सबको देता है।
बदले में कुछ ना लेता है।।

बैठे पेड़ पर कोयल गाती,
मधुर–मधुर वह गाना।

इनके ऊपर बैठे चिड़िया।
पत्ते टहनी कोमल कलियां।।
नहीं किसी को कभी डाँटते।
ना गुस्से से होते आग।।

आँधी, धूप या वर्षा से,
नहीं कभी घबराना।

आपस में सब गले मिलते।
नहीं किसी से कभी जलते।।
जड़ी–बूटी हमको देते ये–
सह कर धूप–छांव हैं देते।।

कैसे उनके फल को भूलें,
आम, अमरूद खाना।

जब–जब जाओ घूमने मेला।
लेकर आओ सेब और केला।।
पेड़ देते मौसमी अंगूर।
रहते पेड़ों पर लंगूर।।

पेड़ को हर्षित कर जाता है,
बादल का पानी बरसाना।

बाल कथा : अंकुश्री

गुस्से का परिणाम

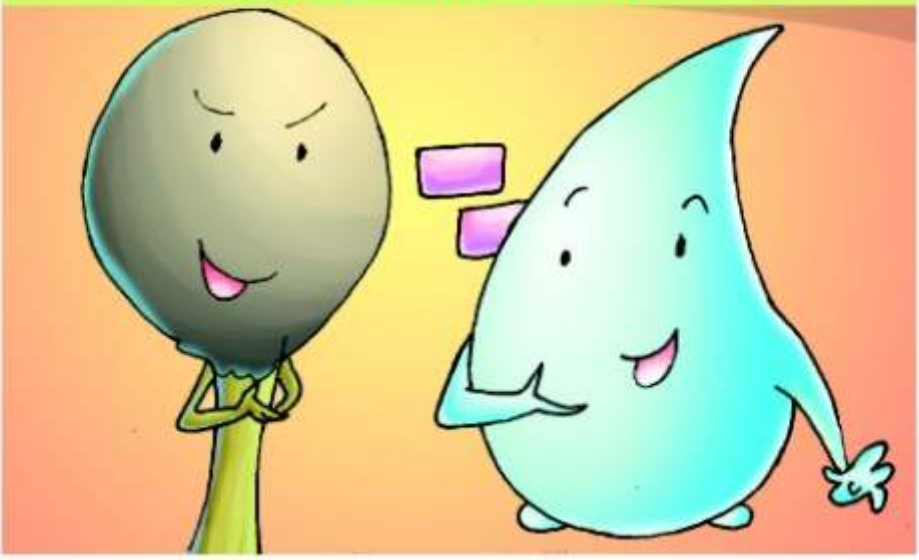

एक थी दीयासलाई की तीली और एक थी पानी की बूंद। दोनों आसपास बैठी बातें कर रही थीं, तीली ने कहा, "मैं नन्हीं होती हुई भी बड़ी शक्तिशाली हूँ, चाहूँ तो पूरी दुनिया को जला कर भस्म कर दूँ।"

"तुम्हें अपनी शक्ति का गलत अंदाज है" बूंद ने कहा, "मैं चाहूं तो क्षणभर में तुम्हें शक्तिहीन बना दूं।"

"बड़ी आई है तीसमारखां बनने। तुम्हें पहले ही बता चुकी हूँ कि मैं दुनिया को भस्म कर सकती हूँ। तब तुम्हारी क्या औकात? जब मैं अपनी शक्ति का प्रयोग करूंगी तो तुम पल भर में वाष्प बन कर आसमान का रास्ता पकड़ लोगी।" बूंद की बात सुनकर तीली ने तमतमाते हुए कहा।

भला बूंद कब चुप रहने वाली थी। शांत स्वर में धीरे से बोली, "सब समय की बात हैं। बड़े–बड़े शक्तिशाली भी समय की मार खाकर शक्तिहीन हो जाते हैं। उसी प्रकार समय पाकर शक्तिहीन भी शक्तिशाली बन जाते हैं।"

"जिसमें शक्ति ही नहीं हो वह भला क्या खाकर शक्ति दिखलायेगा?" तीली ने अकड़ कर कहा, "जिसमें शक्ति है, समय उसकी शक्ति कैसे खत्म कर सकता है?"

"खैर! समय की बात समय आने पर पता चलेगा।" बूंद ने बात समाप्त करते हुए कहा। लेकिन तीली अपनी शक्ति के गुमान में थी। बोली, "समय का रोना वे रोते हैं जो कमजोर होते हैं। तुम कमजोर हो, समय का राग अलापो।"

"मैं बहस द्वारा अपनी शक्ति प्रमाणित नहीं करना चाहती।" बूंद ने कहा।

"क्या कहा? मैं शक्ति प्रमाणित करने के लिए बहस कर रही हूँ?" तीली गुस्से में आ गयी थी, "जिसमें शक्ति ही नहीं हो, वह बहस से क्या प्रमाणित कर पायेगा?"

"अच्छा! अब चुप रहो! बहुत देर से गाल बजा रही हो।" बूंद का यह कहना था कि तीली अपना संतुलन खो बैठी। वह गुस्से में कांपने लगी, बूंद की ओर बढ़ती हुई तीली ने कहा, "मैं गाल बजा रही हूँ? मैं तुम्हें अभी बिना खत्म किये नहीं रहूंगी। आखिर तुमने अपने आप को समझा क्या है?"

तीली गुस्से में अपना आपा खो चुकी थी। वह बूंद से टकरा गयी। बूंद से उसके टकराने भर की देर थी कि उसका बारूद गीला हो गया। वह बेकार हो गयी थी। यह उसके गुस्से का परिणाम था। बूंद पूर्व की तरह शांत पड़ी हुई थी। ◆

हमेशा याद रखें

★ किसी भी लक्ष्य को निर्धारित करने से पूर्व अपनी योग्यता, कार्यक्षमता व समय अवधि को सुनिश्चित कर लें।

★ कठिन कार्य को पहले करने का प्रयास करें।

★ अपनी योग्यता को निरंतर विकसित करें।

★ सोच-समझकर बोलें, आपका वार्तालाप आपकी छवि बनाने और बिगाड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

★ ज्ञान से बढ़कर कोई दौलत नहीं है।

पढ़ो और हँसो

एक बार लड़की के रिश्तेदार शादी के लिए लड़के को देखने आये तो लड़के के पिता ने लड़के को समझाया कि अगर तुझसे कुछ पूछें तो उसका उत्तर बढ़ा–चढ़ा कर देना।

लड़की वाले : (लड़के से) 8–10 हजार कमा ही लेते होगे।
लड़का : जी, 15–20 हजार कमा लेता हूँ।
लड़की वाले : स्कूटर तो होगा?
लड़का : नहीं, मेरे पास तो सैंट्रो कार है।
(लड़के को खाँसी आती है।)
लड़की वाले : खांसी लगी है।
लड़का : नहीं, मुझे तो टी.बी. है।

– गीतू खनेजा (कलानौर)

चित्रकार : (मकान मालिक से) एक दिन लोग याद करेंगे कि इस मकान में एक महान चित्रकार रहता था।
मकान मालिक : अगर आज शाम तक किराया न मिला तो वह दिन आज ही आ जाएगा।

– सोनी निरंकारी (खलीलाबाद)

अपने दोस्त को उदास बैठे देख रवि ने पूछा – क्या बात है दोस्त! इस तरह मुंह लटकाए क्यों बैठे हो?

–मेरी पत्नी बीस दिन के लिए मायके गयी है यार।

–तब इसमे उदास होने की क्या बात है? तुम्हें तो खुश होना चाहिए।

–तुम ठीक कहते हो दोस्त, लेकिन आज बीसवां दिन है–
दोस्त ने कहा।

– भारतभूषण शुक्ल (खलीलाबाद)

एक व्यक्ति ने एक दिन डॉक्टर को फोन किया और पूछा–
डॉक्टर साहब! एक महीने पहले आपके पास जुकाम और सर्दी के इलाज के लिए आया था। आपने मुझको नहाने के लिए मना किया था।
डॉक्टर : तो फिर।
व्यक्ति : क्या अब मैं नहा सकता हूँ।

दो आलसी व्यक्ति एक चादर ओढ़ कर सो रहे थे। तभी एक चोर आया और चादर उन पर से खींच कर भाग गया।
पहला आलसी : पकड़ो... पकड़ो... चोर...
दूसरा आलसी : रहने भी दो अब जब वह तकिया लेने आयेगा तब पकड़ लेंगे।

– मुकुल कुलश्रेष्ठ (आगरा)

सीता : अर्चना, तुम मोटी होती जा रही हो, अपना वजन घटाने के लिए तुम कुछ करती क्यों नहीं?
अर्चना : पिछले तीन महीनों से कोशिश तो कर रही हूँ।
सीता : क्या कर रही हो?
अर्चना : लगातार सुबह–शाम घुड़सवारी कर रही हूँ।
सीता : कुछ फर्क पड़ा क्या?
अर्चना : हाँ घोड़े का वजन घट गया।

घर आये मेहमान ने छोटे बच्चे से पूछा – तुम्हें मम्मी और पापा में कौन अधिक अच्छा लगता है?
छोटे बच्चे का जवाब था– पहली तारीख को पापा और फिर बाद में मम्मी।

संता की कार ट्रैफिक सिग्नल पर रूकी थी। बाहर अखबार बेचने वाला हॉकर चिला रहा था। शहर में 24 लोग ठगे गए।
संता ने तुरंत अखबार खरीदा, पर उसे ठगी की खबर कहीं नहीं मिली। उसने फिर से बाहर देखा तो अखबार बेचने वाला चिल्ला रहा था – शहर में 25 लोग ठगे गए।

–गुरचरण आनन्द (लुधियाना)

अप्रैल अंक रंग भरो परिणाम

प्रथम : शक्ति सोनी
स्टेशन रोड, आलमपुरा
महोबा (उ.प्र.)
आयु 13 वर्ष

द्वितीय : गर्वी
7/5 निरंकारी कालोनी
दिल्ली
आयु 10 वर्ष

तृतीय : दिव्या कोहली
रेलवे स्टेशन के पास
मराण्डा, पालमपुर
जिला : कांगड़ा (हि.प्र.)
आयु 13 वर्ष

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्ठियों को पसंद किया गया वे हैं–

रोशनी (सिन्धी कैम्प, आकोला), निष्ठा (से. 12, सोनीपत), साक्षी (कजारिया ग्रीन्स, भिवाड़ी), ऐश्वर्या (रेलवे स्टेशन के पास, सरदार शहर), नितिन कुमार (कोटला), नेहल (मुर्तिजापुर), सिमरण (मराण्डा), सुशान्त (नावली), अक्षय कुमार (चण्डीगढ़), सिमरन (प्रताप नगर), जगरूप सिंह (अधोया), राममूर्ति (सासन), अमनदीप (हरि नगर, नई दिल्ली), ऋषभ (रायपुर), संतोष (से. 11 ,पंचकूला), समीर (भीवाड़ी), चंचल (बाली), हिमांशु (गुड़गांव), नव्या (आगरा), आरूषि (बलजीत नगर, दिल्ली)।

जून अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर–सुन्दर रंग भर कर 20 जून तक सम्पादक 'हँसती दुनिया', सन्त निरंकारी मण्डल, निरंकारी कालोनी, दिल्ली–09 को भेज दें। तीन सर्वश्रेष्ठ चित्रों पर पुरस्कार दिये जाएंगे।

परिणामों की घोषणा हँसती दुनिया के अगस्त अंक में की जायेगी। चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पूरा पता (पिनकोड सहित) साफ–साफ अवश्य भरें।

रंग भरो

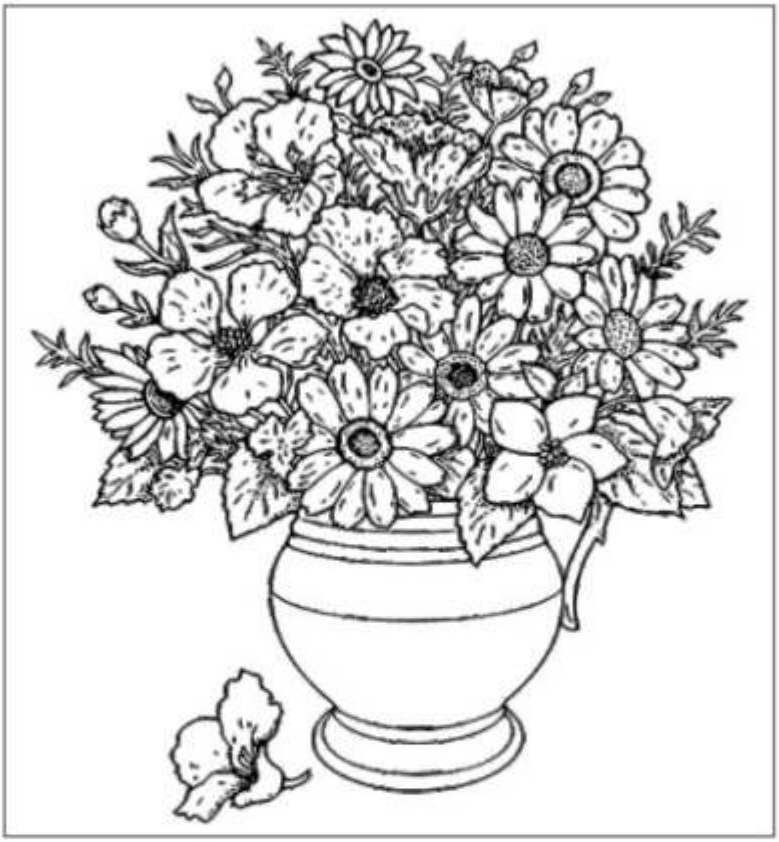

नाम .....आयु.....

पुत्र/पुत्री .....

पूरा पता .....

.....

.....पिन कोड.....

आवश्यक सूचनाएं

हँसती दुनिया (मासिक) को आप घर बैठे ही मंगवा सकते हैं। इसका भारत के लिए वार्षिक शुल्क 100/–रुपये, त्रैवार्षिक 250/– रुपये, दस वर्ष के लिए 600/– रुपये एवं 20 वर्ष के लिए सदस्यता शुल्क 1000/– रुपये हैं तथा विदेशों के लिए शुल्क की दरें पृष्ठ एक पर देंखे। यह शुल्क आप नीचे लिखे पते पर मनीआर्डर/बैंक ड्राफ्ट/चैक या नेट बैंकिंग द्वारा अपने मोबाइल नं. सहित निम्न पते पर भेजें–

पत्रिका विभाग, (हँसती दुनिया)
सन्त निरंकारी मण्डल, निरंकारी कालोनी, दिल्ली–09

नोट : चैक/ड्राफ्ट केवल सन्त निरंकारी मण्डल के नाम दिल्ली में देय होने चाहिए।

- नेट बैंकिंग की डिटेल HDFC Bank A/c No. 50100050531133 NEFT/RTGS IPSC Code— HDFC 0000651 है। इसमें आप नगद अथवा चैक/ड्राफ्ट आदि भी जमा करा सकते हैं।
- जब भी आपका पता बदले तो पता बदलवाने के लिए पुराना व नया दोनों पूरे पते साफ–साफ व स्पष्ट अक्षरों में लिखें। चिट संख्या भी देंगे तो सुविधा होगी।
- अगर आप पहले से ही पत्रिका के सदस्य हैं तो पत्रिका का बकाया चन्दा भेजते समय भी कृपया अपना चिट नम्बर अवश्य लिखें।
- जिस लिफाफे में आपको पत्रिका मिलती है उसके ऊपर जहाँ आपका पता लिखा होता है, वहीं पर शुरू में आपका चिट नं. भी छपा होता है, उसे कृपया नोट कर लें। यदि आपको पत्रिका न मिलने की सूचना देनी हो तो वह चिट नं. भी साथ लिख दिया करें। इससे कार्य में सरलता हो जाती है।
- पत्रिका से सम्बन्धित कोई भी शिकायत या जानकारी प्राप्त करनी हो तो आप 011–47660360 पर फोन कर के या E-mail: patrika@nirankari.org द्वारा जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

कविता : मदन 'शेखपुरी'

जल जीवन है

'जल जीवन है।'
ऐसे नारे तो तुम खूब लगाते हो
फिर क्यों इसे लुटाते हो?
क्यों नहीं इसे बचाते हो?
जल जीवन है।

पापा! अपनी गली में देखो
बिन टोंटी के नल चलता है।
बिना जरूरत के वैसे ही,
चलो यह, मुझको खलता है।
जल जीवन है।

देखो, अपने घर की टोंटी
पापा! टप–टप टपक रही है।
चलो गली की बात को छोड़ो
घर में क्या यह बात सही है?
जल जीवन है।

क्यों नहीं ठीक इसे करवाते?
लोगों को फिरते समझाते।
'जल जीवन है, जल जीवन है।'

किट्टी
चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा
नमस्कार मैं हूँ किट्टी
आज मैं बताऊँगी पेड़ों से हमें क्या-क्या लाभ हैं।

ये हमें छाया प्रदान करते हैं।
और ये हमें फल प्रदान करते हैं। जो हमारे स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभकारी हैं।
पेड़ हमें सब्जियां भी प्रदान करते हैं।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि पेड़ हमें ऑक्सीजन देते हैं, जिससे हम जीवित रहते हैं।
ये बरसात करवाने में भी सहयोग देते हैं।
ये बाढ़ में पानी के बहाव से भी हमें बचाते हैं।

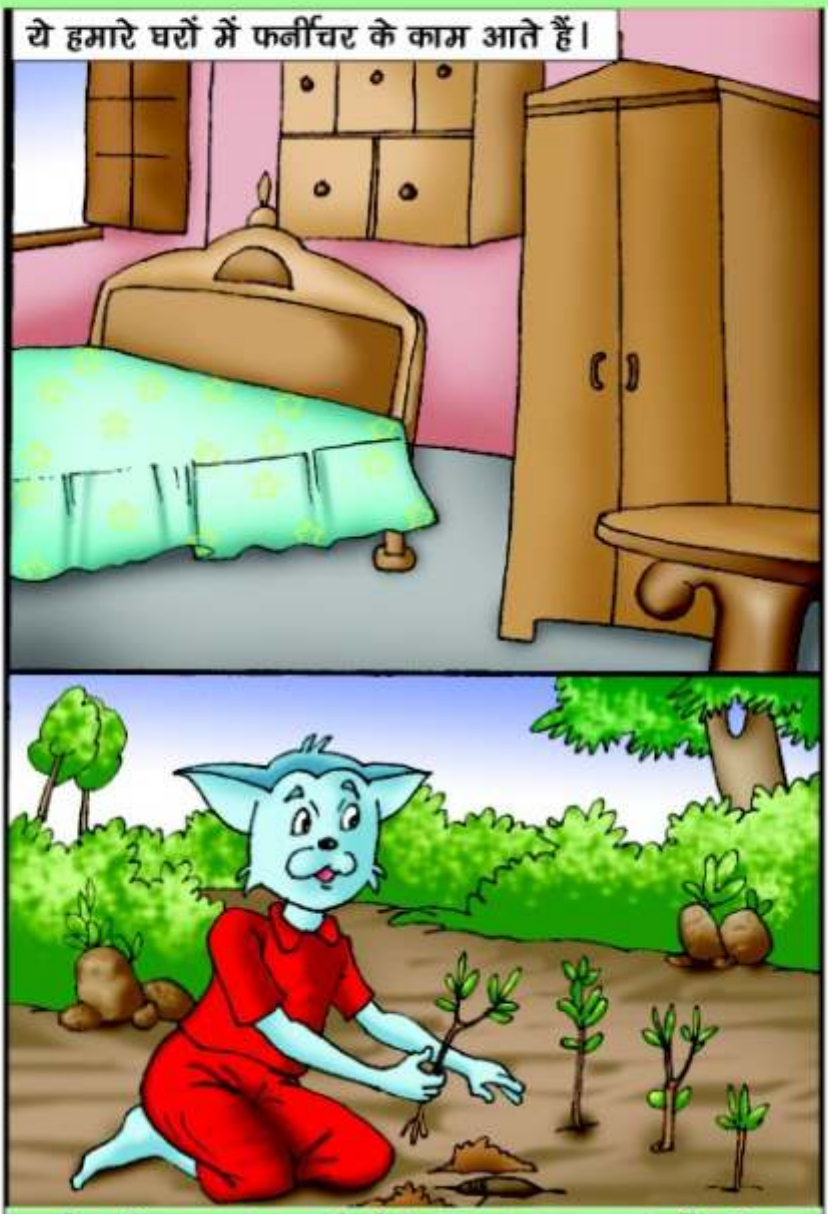

और भी बहुत से कामों में पेड़ हमारे काम आते हैं। फिर क्यों हम इन्हें काट कर अपनी मृत्यु को अपने निकट लाते हैं। क्यों न हम पेड़ लगायें और अपने जीवन को सुखद बनाएं।

कहानी : राधेलाल 'नवचक्र'

समझौता

एक दिन आँख और कान में झड़प हो गयी। आँख घमण्ड से बोली, "मैं तुमसे श्रेष्ठ हूँ।"

"नहीं, मैं श्रेष्ठ हूँ।" कान गुर्राया।

"मैं हूँ", आँख अपनी बात पर अड़ी–डटी रही।

"कैसे हो बता?" कान ने सवाल जड़ा।

"मेरी वजह से लोग सब कुछ देख पाते हैं।" आँख ने जवाब दिया।

"तो मेरी वजह से लोग सुनते हैं।"

"दूर से ही लोग खतरे को देखकर मेरी वजह से बच जाते हैं।" आँख ने अपना पक्ष रखा।

"आवाज सुनकर भी लोग खतरे का आभास पा जाते हैं और अपने को बचा लेते हैं।" कान ने तर्क दिया।

"क्या तुम नहीं जानते कि मेरा देखा सच और तुम्हारा सुना झूठ भी होता है?" आँख ने भारी भरकम सवाल खड़ा किया।"

"सुना है ऐसा।"

"फिर?"

"मगर यह कथन बिल्कुल सही नहीं है।"

"कैसे?" आँख चिढ़ गई।

"सूरज को लोग पूरब से पश्चिम की ओर जाते हुए देखते हैं, लेकिन सच्चाई यह है कि सूरज अपनी जगह स्थिर है।" कान आगे बोला, "इससे तुम्हारी बात झूठ सिद्ध नहीं होती।"

"तुम्हारी सुनी सच कैसे है?" आँख ने पीछा नहीं छोड़ा।

"धरती को सभी स्थिर देखते हैं। मगर यह अच्छी तरह सिद्ध हो चुका है कि धरती घूमती है – अपनी धूरी पर और सूरज के चारों ओर भी। सबने इसे सुना है, पढ़ा है। किसी ने देखा तो नहीं है। देख पाना संभव भी नहीं है।" कान ने आगे कहा, "रात–दिन और ऋतु परिवर्तन उसी की वजह से होता है।"

आँख को अब कोई तर्क नहीं सूझा। फिर भी वह बोली, "तुम श्रेष्ठ कैसे हो?"

"तुम तो सिर्फ एक ओर देख पाती हो और मैं हर तरफ की आवाज सुन लेता हूँ। यही मेरी खासियत है।" कान फिर बोला, "सोया आदमी किसी के देखने से जग नहीं सकता मगर आवाज सुनकर जाग जाता है। किसी तरह के खतरे से बच सकता है।"

कान के तर्क के आगे जब आँख निरूत्तर हो गयी तो उसका घमण्ड जाता रहा।

आँख को निरुत्तर देखकर कान शान्त भाव से बोला, "दरअसल हम दोनों का महत्व अपनी–अपनी जगह सही है। जहाँ तुम्हारी जरूरत है, मैं कुछ नहीं कर सकता और जहाँ मेरी जरूरत है, वहाँ तुम कुछ नहीं कर सकती।"

"तुम ठीक कह रहे हो," आँख को कान की समझौते वाली बात खूब पसन्द आयी।

फोटो फीचर

मुझे फूलों का बगीचा बहुत पसन्द है। मैं इसकी देखभाल भी करती हूँ।
– बिन्दू (ग्वाहिटी)

मैं तो अपने बगीचे में मजे से झूला झूलती हूँ। – सुकीर्ति (जीन्द)

मुझे हरी–हरी पत्तियां बहुत अच्छी लगती हैं।
– रोहन
(सन्त नगर, दिल्ली)

हाँ मुझे पता है, हरे–भरे पर्यावरण के कारण ही मानव जीवन सुरक्षित है।
– अगम (गुड़गांव)

पर्यावरण क्या होता है, मुझे भी तो बताओ।
– कार्तिक (सन्त नगर, दिल्ली)

अरे तुम्हें यह नहीं पता कि पेड़–पौधों से हमें ऑक्सीजन मिलती है, और इन्हीं के कारण हम जिंदा रहते हैं।
– पूर्वी (उमरगांव)

कविता : डॉ. रामनिवास 'मानव'

बिल्ली भूरी-काली

आधी भूरी, आधी काली।
मोनू जी ने बिल्ली पाली।

सुनकर नाम दौड़कर आती,
बड़े प्यार से पूंछ हिलाती।
'म्याऊं–म्याऊं' जब करती है,
लगती सुन्दर भोली–भाली।

हरदम घर में दौड़ लगाती,
चूहों से मिल खेल रचाती।
मम्मी भी अब खुश हैं उससे,
करे दूध की वह रखवाली।

पापा जी को लगती प्यारी,
करते उसकी खातिरदारी।
बिस्कुट–दूध खिलाते उसको,
स्वयं हाथ में लेकर थाली।

जब भी कभी घूमने जाते,
अपने साथ उसे ले जाते।
देख–देख कर उसकी क्रीड़ा,
सारे खूब बजाते ताली।

आलेख : भावना जेस्वानी

विद्यार्थी छुट्टियां कैसे मनाएं?

एक माह की कड़ी मेहनत के बाद विद्यार्थियों को डेढ़ या दो माह की छुट्टियों का समय मिलता है जिसमें कुछ करने का, कुछ सोचने–समझने का अच्छा–खासा अवसर मिलता है लेकिन प्रायः ऐसा देखा गया है कि विद्यार्थी इस कीमती समय को टी.वी. सिनेमा आदि देखने में तथा फालतू पुस्तकों को पढ़ने में बर्बाद कर देते हैं। समय का जो सदुपयोग हो जाता है एवं जो अपने समय का सदुपयोग करता है उसका जीवन मूल्यवान हो जाता है। अतः मिली हुई योग्यता एवं मिले हुए समय का सदुपयोग उत्तम से उत्तम कार्यों के सम्पादन में व्यतीत करना चाहिए। वे मानव बड़े भाग्यवान होते हैं जो समय का सदुपयोग कर समाज में व्यतीत करना चाहिए। वे मानव बड़े भाग्यवान होते हैं जो समय का सदुपयोग कर समाज की सेवा कर अपने जीवन को उन्नत बना लेते हैं। समय के सदुपयोग हेतु निम्न सुझाव दिये जा रहे हैं

★ शास्त्र कहते हैं बुद्धिमान मनुष्य वह है जो अपने जीवन में सबसे महत्वपूर्ण कार्य को सबसे पहले सम्पन्न करता है।

★ अपन से छोटी कक्षाओं वाले विद्यार्थियों को पढ़ाना चाहिए। विद्या वही सार्थक है जो दूसरों को भी ज्ञान से आलौकित करें। बालकों को रुचिकर, चरित्र निर्माण और देश प्रेम की कथाएं सुनानी और पढ़ानी चाहिए।

★ पिछड़े क्षेत्रों में जाकर वहाँ के लोगों को पढ़ाएं तथा उन्हें अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूक करना चाहिए।

★ अपने से अधिक योग्यता व शिक्षा वाले विद्यार्थियों के ही साथ रहकर विनोद व शिक्षा सम्बन्धी चर्चा करनी चाहिए।

★ अपने साथियों के साथ अपने गली, मुहल्ले में सफाई अभियान चलाना चाहिए।

★ मानव कल्याण के मिशन के प्रचार–प्रसार में अपना भरपूर प्रयास करना। अधिक से अधिक बच्चों को निरंकारी बाल संगत से जोड़ना।

लेख : गोपाल जी गुप्त

इतिहास चाकलेट और कोकोआ वृक्ष का

आज बाजार में भिन्न–भिन्न प्रकार के सुस्वादु चाकलेट लोगों को लुभाते हुए मौजूद हैं जो न केवल बच्चों को ही बल्कि बड़ों को भी प्रिय हैं किन्तु इसके जन्म की कथा इससे भी अधिक लुभावनी है। चाकलेट का प्रयोग आज न केवल टॉफी के रूप में ही वरन् अनेक पेय पदार्थों में हो रहा है। कहते हैं कि इसका श्रेय एजटेक वालों को है जो इसके वृक्ष, कोकोआ की फलियों को कूट पीसकर इनमें कई मसाले मिलाकर एक स्वास्थ्यवर्द्धक पेय बना कर ग्रहण करते थे।

इसका मूल स्थान दक्षिणी तथा मध्य अमेरिका है। ईसा पूर्व प्रथम शताब्दी में दक्षिणी मैक्सिको में बहुतायत से कोकोआ वृक्ष उगाए जाते थे और इसे बहुत मूल्यवान वृक्ष माना जाता था। इसकी फलियों के बीज, जिन्हें बीन्स कहा जाता है, से बने पेय पीने का सामर्थ्य केवल धनिकों को था और इसे देवताओं का भी प्रिय माना जाता था। विश्व के मौद्रिक इतिहास से पता चलता है कि इसके बीन्स मौद्रिक इकाई के रूप में वैसे ही मान्य थे जैसे भारत में कौड़िया मान्य थीं। अमेरिका से यह पौधा स्पेन, वहाँ से फ्रांस, यूरोप पहुँचा, जहाँ से इसकी पहुँच श्रीलंका तक हुई और लगभग सवा शताब्दी पूर्व कुछ लोग इसके वृक्ष तथा बीज श्रीलंका से भारत लाये और इसकी उपज नीलगिरी की पहाड़ियों पर हुई। शनैः–शनैः यह केरल, तमिलनाडु, कर्नाटक के खेतों तथा कईयों की गृहवाटिकाओं, फार्म हाउसों में उगाये जाने लगे। इनकी बीन्स से ही चाकलेट एवं अन्य पेय पदार्थ बनाये जाते हैं।

→

★ प्राचीन ऐतिहासिक धार्मिक स्थलों में जाकर अपने विवेक विचार को बढ़ाना चाहिए।

★ अपनी पढ़ाई को छुट्टी के दौरान एकदम नहीं छोड़ना चाहिएं अध्ययन करते रहना चाहिए।

इस प्रकार दैवी कार्यों से आप अपनी इन छुट्टियों को विशेष रूप दे सकते हैं। जीवन बहुत थोड़ा है तथा बीता हुआ समय कभी वापस नहीं आता इसलिए अपने जीवन के इस कीमती समय को अच्छी, शिक्षाप्रद एवं धार्मिक पुस्तकें पढ़कर व्यतीत करें।

कहा जाता है कि सन् 1519 में स्पेन के प्रसिद्ध अन्वेषक हनीण्डो कोर्टेस मैक्सिको के शासक मोंटेजुआ के दरबार में गये तो उनके समक्ष इस पेय को प्रस्तुत किया गया जिसे पी कर वह आनन्दित हो उठे। उन्हीं के द्वारा स्पेनवासियों को इसकी जानकारी हुई और वहाँ भी कोकोआ वृक्ष की पैदावार होने लगी। सैकड़ों साल तक वे मीठे सुगन्धित पदार्थ, दालचीनी, वनीला आदि मिश्रित कर इसके गर्म सुस्वाद पेय का आनन्द उठाते रहे परन्तु वे इसकी निर्माण प्रक्रिया गोपनीय बनाए रहे। शनैः–शनैः गोपनीयता भंग हुई एवं फ्रांस, यूरोप एवं अन्यान्य पाश्चात्य देशवासियों ने इसका स्वाद चखा। उस समय यह एक महंगे विलासिता युक्त पेय के रूप में लोकप्रिय रहा।

अट्ठारहवीं शताब्दि के छठे सातवें दशक तक बीन्स से सुस्वाद पेय पदार्थ ही बनाये जाते रहे और ये तरल रूप में ही रहे। इसे ठोस रूप प्रदान किया गया।

सन् 1765 में जब अमेरिका में मैसाचुसेट्स (डोरचेस्टर) के निकट मिल्टन लोअर मिल्स ने पहली बार मोल्डिंग तकनीक से ठोस चाकलेट का निर्माण किया। इस पर अनुसंधान होने लगे और सन् 1825 में डचमैन कोमराड वान ह्यूटेन ने पहली बार कोकोआ बटर तैयार किया। जो 97° फारेनहाइट के तापमान पर पिघलने/घुलने लगता था। इस तरह से ऐसा ठोस चाकलेट बना जो मुँह में जाकर पिघल जाए।

विश्व में आज कोकोआ का सर्वाधिक उत्पादन घाना में होता है। इसके बाद ब्राजील, नाइजीरिया, फ्रांस, यूरोप आदि आते हैं। आज बीन्स अनेक प्रकार के पेय पदार्थों में प्रयुक्त होता है। बीन्स का सर्वाधिक उपयोग अमेरिका में होता है।

कोकोआ वृक्ष का वानस्पतिक नाम थियोब्रोना काकाओ है। यह स्टटकूलिया प्रजाति का सदाबहार वृक्ष है, जिसकी रूप–रेखा/रचना अनोखी होती है। इसका पौधा उगने के बाद एक–डेढ़ मीटर तक सीधा बढ़ता है, फिर इसमें 5–6 शाखाएं फूटती हैं जो सीधे ऊपर न जाकर भूमि के समानान्तर बढ़ती हैं। सबसे ऊपर की कली भी शाखा का रूप ले लेती है और आगे की बढ़त एक कल्ले (जिसे सकर कहते हैं) द्वारा होती है। यह कल्ला पौधे के पंख जैसे शिखर के नीचे से फूटता है।

कुछ ऊँचा बढ़ने पर इससे भी अगल–बगल में बढ़ने वाली शाखाएं फूटती हैं जो एक प्रकार से कोकोआ वृक्ष की दूसरी मंजिल होती है। शनैः शनैः कुछ ही महीनों में इसकी तीसरी मंजिल भी इसी तरह तैयार हो जाती है। इस वृक्ष की औसत ऊँचाई 10 मीटर होती है। इसकी पत्तियां 20–30 सेंटीमीटर लम्बी, लम्बवत् होती है। शाखाओं में पत्तियों के बगल में ही फूल खिलते हैं जो बाद में फली के रूप में बदल जाते हैं। तीन से चार साल के ही दौरान कोकोआ फलने–फूलने लगता है और 45 साल तक फलता–फूलता है। 50 साल का होते–होते यह फलना–फूलना बंद कर देता है। फूल को फली बनने में लगभग 4–5 महीने लगते हैं और एक वृक्ष में औसतन 80 से 120 तक फूल और फलियां आती हैं।

चाकलेट बनाने के लिए फलियों को वृक्ष से काट कर अन्दर से गूदे सहित बीज निकाल लिये जाते हैं जिन्हें किसी ट्रे या तश्तरी में सूखने के लिए रख दिया जाता है। एक सप्ताह में इसका फर्मेण्टेसन (किण्वन) हो जाता है और बीज भूरे रंग के हो जाते हैं। अब गूदे से बीन्स अलग कर एक निश्चित तापमान पर भट्टियों में सुखाते हैं। सूख गए बीजों को चुन–चुन कर साफ करते हैं और उन्हें लोहे के ड्रम में भूनते हैं। भुन जाने के बाद उन्हें नालीदार रोलर में डाला जाता है जहाँ उनके छिलके अलग होते हैं और बीन्स दाल की तरह दो भागों में हो जाते हैं। फिर उन्हें पीसकर उनका पाउडर बनाया जाता है जिससे चाकलेट तैयार होता है तथा इसे ही अन्य पेय पदार्थों में भी प्रयुक्त किया जाता है।

वैज्ञानिकों के अनुसार चाकलेट में प्रोटीन, वसा, विटामिन ई, कैलशियम, फॉस्फोरस, आयरन, मैग्नीश्यिम सहित अनेक रसायनिक तत्व होते हैं। चाकलेट से कोई दुष्प्रभाव होता है तो इसकी जानकारी अभी तक नहीं मिली है किन्तु शोध बताते हैं कि इसके सेवन से एण्डोर्फीन नामक हार्मोन पैदा होता है जो दर्द निवारक होता है तथा प्रसन्नता की अनुभूति कराता है। यह अनेक बीमारियों में भी लाभदायक है। फिर भी इसका अधिक सेवन नहीं करना चाहिए क्योंकि भारतीय मान्यता के अनुसार अतिशय उपयोग वर्ज्य है (अति सर्वत्र वर्जयेत्)।

रास्ता बताइए

भूखे बछड़े को सही मार्ग द्वारा गाय के निकट पहुँचाइए.

★ चाँद मोहम्मद घोसी

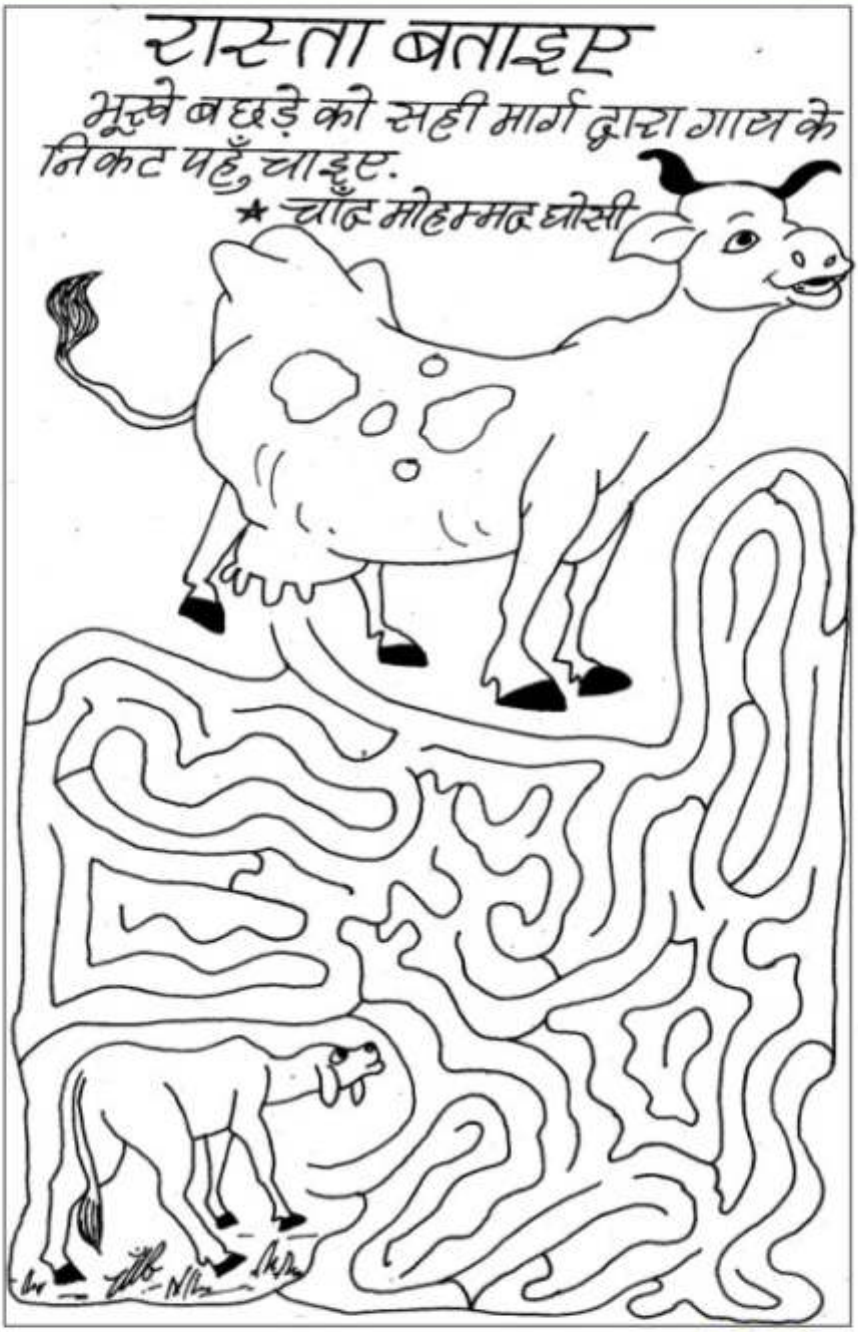

आपके पत्र मिले

मैं हँसती दुनिया की नियमित पाठक हूँ। मुझे हँसती दुनिया बहुत अच्छी लगती है। मैं हँसती दुनिया के आने का बेसब्री से इंतजार करती हूँ। मैं हँसती दुनिया को खुद पढ़ती हूँ और अपने मित्रों, सहपाठियों को भी पढ़ाती हूँ। इसमें हमें कहानियां तथा महापुरुषों से जुड़े प्रेरक–प्रसंग बहुत अच्छे लगते हैं। 'भैया से पूछो' भी ज्ञान में वृद्धि करता है। मैं आपकी बहुत आभारी हूँ।

– शालू राय (घड़सी)

मैं हँसती दुनिया की सदस्य हूँ। हमें हँसती दुनिया का बेसब्री से इंतजार रहता है। इसे हमारी कक्षा के सहपाठी भी पढ़ते हैं। इसमें मुझे 'कभी न भूलो', 'भैया से पूछो', स्तम्भ के अलावा कहानियां एवं कविताएं ज्ञानवर्द्धक एवं रोचक होती हैं।

मेरी प्रभु से यही प्रार्थना है कि यह पत्रिका दिन दूगुनी व रात चौगूनी तरक्की करे।

– मोनी (खलीलाबाद)

मुझे व मेरे छोटे भैया को हँसती दुनिया बहुत अच्छी लगती है। हम इसके नियमित पाठक हैं। हम इनके सारे पुराने अंक संभाल कर रखते हैं।

– मुस्कान (रामपुराफूल)

ठान लिया

हमने ठान लिया है मन में,
आगे बढ़ते जाएंगे।
अच्छी बातों को अपनाकर,
जीवन का रूप निखारेंगे।
आलस्य जब कभी आएगा,
हम तभी उसे दुत्कारेंगे।
गाँठ बाँध ली है जीवन में,
जीवन गढ़ते जाएंगे।
अपने जैसा समझ सभी को,
उनका आदर–मान करेंगे।
दीन–दुःखी यदि देखेंगे हम,
उनका पूरा ध्यान करेंगे।
प्रगति–हित, शक्ति लेकर मन में,
उन्नत सीढ़ी चढ़ते जायेंगे।

जुलाई माह से हँसती दुनिया बड़े और नये साईज में उपलब्ध होगी।

वर्ग पहेली के उत्तर

1 पा	2 कि	स्ता	3 न		4 सि
	सा		5 कु	वै	त
6 ज	न	7 र	ल		म्ब
ल		स		8 न	र
9 ज	10 म	ना	11 ला	ल	
	न्दि		ओ		12 था
13 गु	र	दा	स	पु	र

TU HI NIRANKAR

AN ISO 9001:2000 Certified Company.

SUPER AQUA®

R.O. System

WHITE GOLD®

AQUA FRESH

Reverse Osmosis

AN ISO 9001:2000 Certified Company.

Wholesale & Retailer of all type of **Water Purifier, Water Dispenser, R.O. System & Commercial R.O System 100 to 500 Ltr.**

Free Gift (Mix. Cooker)

Free Gift (Juicer Mixer)

Free Gift (Toaster)

SALE-SERVICE & AMC WATER PURIFIER SYSTEM

FREE DEMO WATER TESTING

आसान किस्तों पर उपलब्ध 0% FINANCE

for enquiry call Customer Care

09650573131

(Arvind Shukla)

स्वच्छ पानी, स्वस्थ जीवन

SATGURU HOME APPLIANCES

(Call. 09910103767)

Head office. E-1/23, Ground Floor Sec-16, Rohini Nr. Jain Bharti Public School, Delhi-110085

Mumbai office. Flat No. 302, C-Wing, Parth Complex Nr. T.V Tower, Badlapur (East) Thane, Maharashtra.

पानी की शुद्धता सेहत की सुरक्षा, दूषित एंव खारे पानी को मिनरल बनायें

पेश है **Super Aqua** एक ऐसा प्यूरिफायर जो न केवल आधुनिक तकनीक से पानी को स्वच्छ करता है, बल्कि उसे फिल्टर होने के बाद लम्बे समय तक रखने के लिए सक्षम बनाता है। यह सम्भव होता है एक खास फिल्म के **U.V.** चैम्बर से। जब पानी इस कार्टरेज से गुजरता है तो उसमें एक विशेष फिल्म का बैक्टीरिया विरोधक तत्व मिल जाता है जो पानी को लम्बे समय तक रखने और पीने योग्य बनाता है।

तो ध्यान रहे पीने के पानी में कोई लापरवाही न बरतें, सिर्फ **SUPER AQUA** ही अपनाएं।

MUBAI : Vorivali, Kurla, Dadar, Thane, Ulhas Nagar, Kalyan, Badlapur **MAHARASHTRA** : Pune, Aurangabad, Varsa, Nagpur, Buland, Kohlapur **SOUTH INDIA** : Hyderabad, Belgaum **UTTAR PRADESH** : Allahabad, Gorakhpur, Mathura, Agra, Kanpur, Jonpur, Lucknow, Azamgarh **UTTRAKHAND** : Dheradun, Haldwani, Rishikesh, Haridwar **PUNJAB** : Chandigarh, Hoshiarpur, Bhatinda, Patiala, Jalandhar, Ludhiana **BIHAR** : Patna, Samastipur, Darbhanga, Gaya, Bhagalpur **WEST BENGAL** : Kolkata, Sealdah **RAJASTHAN** : Jaipur, Jodhpur

Dhan Nirankar Ji

V.P. Batra
+91-9810070757

Guru Kripa Advertising Pvt. Ltd.

Outdoor Advertising Wallpaintings
All Over India

Pankaj Arcade-II, Plot no. 5, 2nd floor, Sec 11
Pocket IV, Dwarka, New Delhi-110075
Ph: 011-42770442, 011-42770443
Fax 011-28084747, 42770444 Mob.: 9810070757
email: info@gurukripaadvertising.com
www.gurukripaadvertising.com

Registered with the
Registrar of Newspaper
For India Under RNI No. 25672/73

Delhi Postal Regd. No. DL-(N)-01/0136/2015-17
Licence No. U (DN)-23/2015-17
Licenced to post without Pre-payment

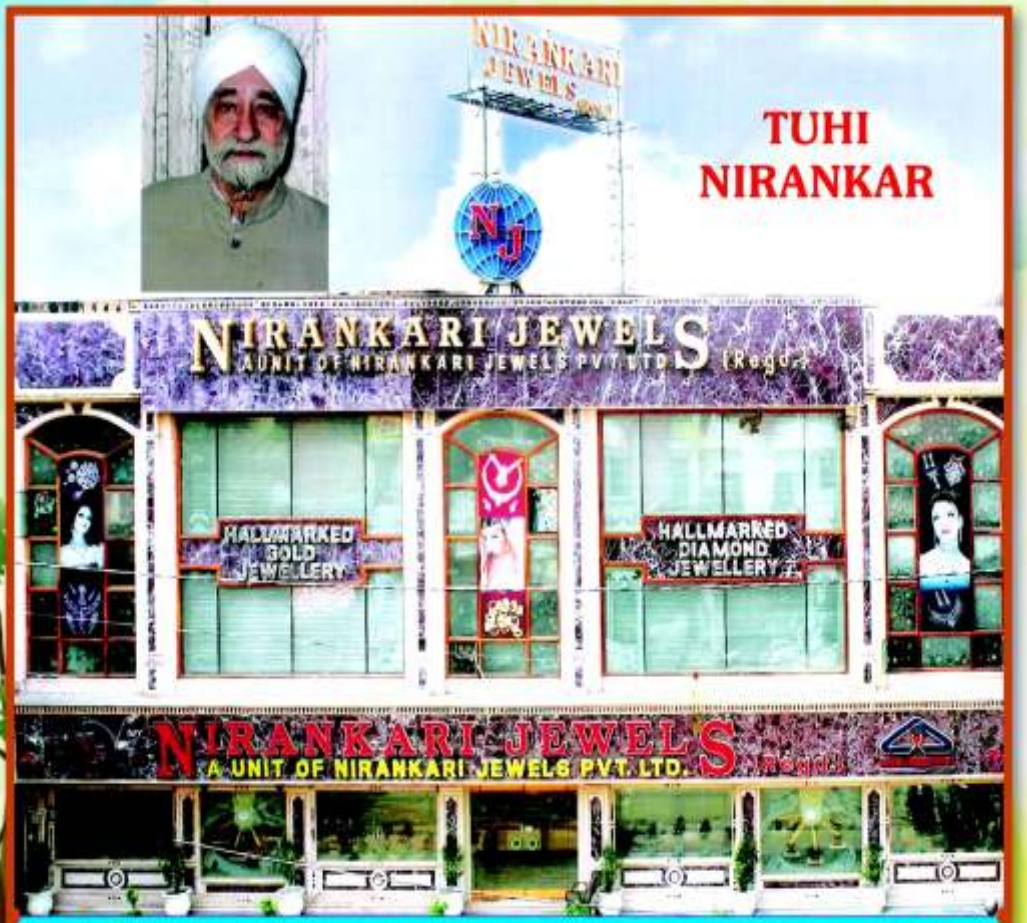

NIRANKARI JEWELS REGD.
A UNIT OF NIRANKARI JEWELS PVT. LTD.

GOVT. APPROVED VALUERS
78-84, Edward Line, Kingsway, Delhi-110009
TELE : (Showroom)
27227172, 27138079, 27244267, 42870440, 42870441, 47058133
E-mail : nirankari_jewels@hotmail.com

Posted at IMBC/1 Prescribed Dates 21st & 22nd
Dates of Publication : 16th. & 17th. (Advance Month)